सामाजिक विज्ञान शिक्षण: वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ एवं भावी सम्भावनाएँ

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

की

मास्टर ऑफ़ एजूकेशन (एम० एड०)

उपाधि की आंशिक अभिपूर्ति हेतु

प्रस्तुत

लघु शोध–प्रबन्ध

सत्र : 2016-17

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. राजीव अग्रवाल

(विभागाध्यक्ष)

शोधकर्ता

विनय कुमार

शिक्षक - शिक्षा विभाग

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

सम्बद्ध-बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ. प्र.)

घोषणा - पत्र

मैं, **विनय कुमार** पुत्र श्री रामरतन, एम०एड० उत्तरार्द्ध छात्र, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) सत्र: 2016-17 घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध **"सामाजिक विज्ञान शिक्षण वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ एवं भावी सम्भावनाएँ"** मेरा मौलिक कार्य है | इसे मैंने डॉ. राजीव अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पी. जी. कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) के सुयोग्य निर्देशन में सम्पन्न किया है | यह लघु शोध प्रबन्ध इसके पहले कहीं अन्यत्र प्रस्तुत नहीं किया गया है |

दिनांक : शोधकर्ता

स्थान : अतर्रा (बाँदा) (विनय कुमार)

डॉ. राजीव अग्रवाल
विभागाध्यक्ष

शिक्षक –शिक्षा विभाग
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
अतर्रा (बाँदा)

प्रमाण-पत्र
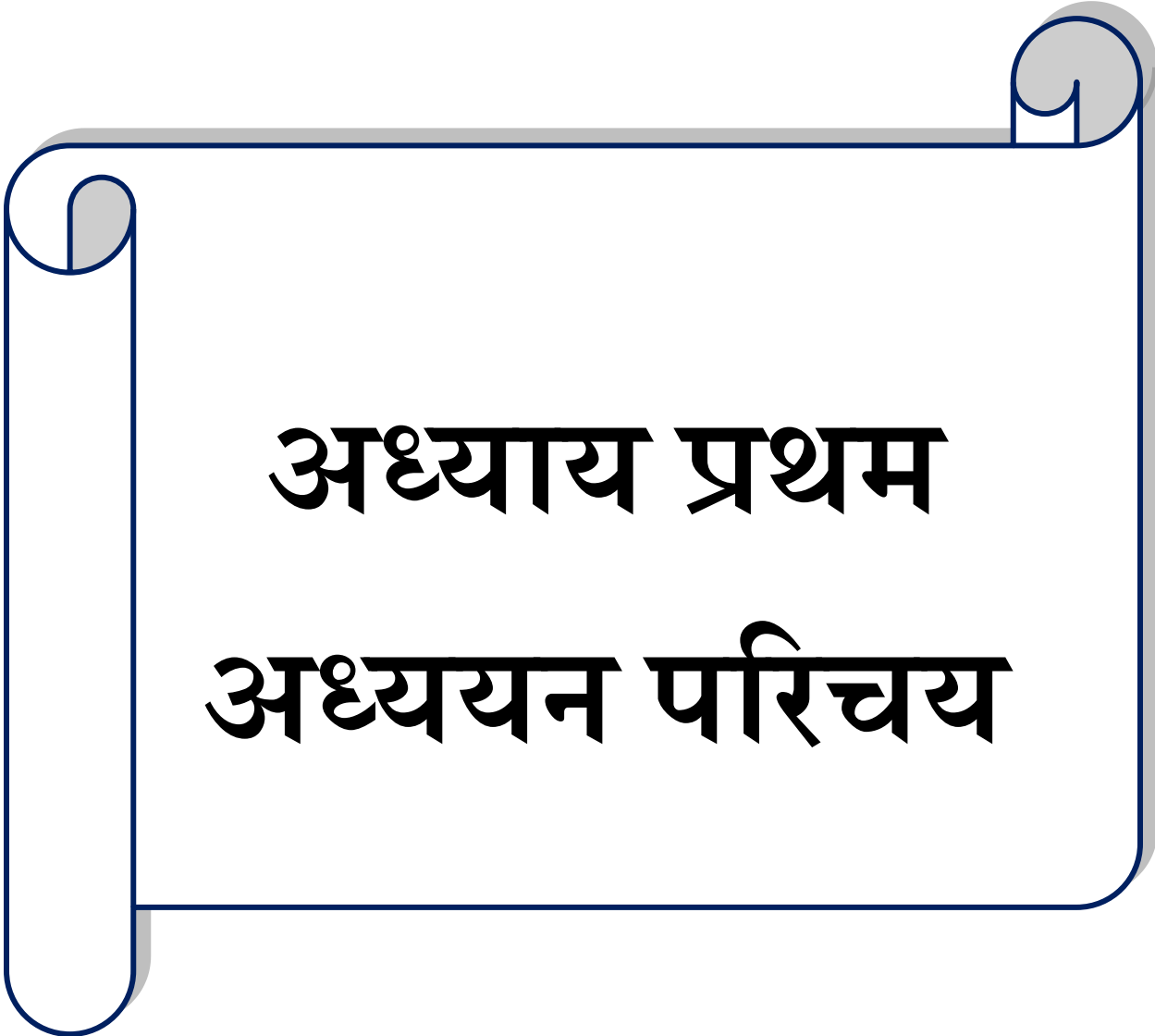
प्रमाणित किया जाता है कि **विनय कुमार** पुत्र श्री रामरतन, एम. एड. उत्तरार्द्ध छात्र, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) ने मास्टर ऑफ एजूकेशन (एम.एड.) उपाधि वर्ष-2017 की आंशिक अभिपूर्ति हेतु अपना लघु शोध प्रबन्ध **"सामाजिक विज्ञान शिक्षण: वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियां एवं भावी सम्भावनाएँ"** मेरे सतत् निर्देशन एवं निरीक्षण में रहकर सम्पन्न किया है |

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध छात्र की मौलिक कृति है, जो इनके परिश्रम, लगन, एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिणाम है | मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ |

दिनांक :

स्थान : अतर्रा (बाँदा) (डॉ. राजीव अग्रवाल)

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

सामाजिक विज्ञान के विषय अकादमिक अध्ययन के वे क्षेत्र हैं जो मानव समाज और जटिल मानवीय सम्बन्धों के विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण करते हैं| एक न्याय पूर्ण तथा शांतिपूर्ण समाज हेतु आधार निर्मित करने के लिए सामाजिक विज्ञान विषयों के दृष्टिकोण और जानकारी अपरिहार्य है| सामाजिक विज्ञान मानव समाज का अध्ययन करने वाली विधा है| यह प्राकृतिक विज्ञानों के अतरिक्त अन्य विज्ञानों का एक समूह है| मानवीय ज्ञान प्राकृतिक विज्ञानों और सामाजिक विज्ञानों में वर्गीकृत किया गया है| प्राकृतिक विज्ञानों में भौतिक विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, रसायनशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, जंतु विज्ञान, इत्यादि सम्मलित है और सामाजिक विज्ञानों के अंतर्गत वे विषय आते है जो मानव उद्भव, संगठन तथा विकास से सम्बन्धित है| मानवीय क्रियाओं एवं उसके प्रभाव का अध्ययन इतिहास, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र,समाजशास्त्र एवं भूगोल इत्यादि के समन्वित रूप में सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत किया जाने लगा है| सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत समाज के विविध सरोकार आते है|

(श्री वास्तव, रोमा पृष्ठ 7)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र- भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान है| इतिहास सामाजिक विज्ञान की महत्वपूर्ण विधा ह| इतिहास विषय- मानव के सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रतिवेदन है| राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने "*शिक्षा बिना बोझ*" के (1993) की रिपोर्ट की अनुसंशाओं के आधार पर स्कूली पाठ्यचर्या के सुपरिचित क्षेत्र सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन के सुझाव दिए हैं| इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 महज शब्द आधारित पाठ के स्थान पर स्थान पर ऐसे

पाठों की हिमायत करती है जिनमें गतिविधियाँ, चित्र, तस्वीरों, मानचित्रों, कार्टूनों का समावेश हो तथा वे विषयवस्तु के अभिन्न अंग हों| चित्र, तस्वीरें, मानचित्र आदि विषयवस्तु को रोचक तथा आनंददायक बना देते हैं| चित्रों द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौन्दर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है|

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित इस प्रकार के चित्रों के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण करता है तथा नए ज्ञान का सर्जन करता है| विद्यार्थी अपने आप को दूसरों से जोड़कर देखना सीखता है जिससे उसकी समझ बनती है| राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की विचारधारा के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा निर्मित इतिहास की पाठ्यपुस्तकें पाठ तथा दृश्य सामग्री (चित्र, तस्वीर, मानचित्र) के साझेपन में इतिहास की पाठ्यपुस्तकें अपने शैक्षिक उद्देश्य को साकार कर पा रही हैं|

इतिहास विषय मानव की संपूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रतिवेदन है| अतीत के अध्ययन के आधार पर वर्तमान को समझा जाता सकता है और भविष्य को उज्ज्वल बनाया जाता है| इसलिए विद्यालयी पाठ्यचर्या में इतिहास विषय का प्रमुख स्थान है| इतिहास के शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का महत्व बहुत अधिक है क्योंकि इतिहास भूतकाल से संबद्ध है तथा भूतकाल के विषय में सजीवता की अनुभूति को जागृत एवं विकसित करने में पाठ्यपुस्तकें विशिष्ट भूमिका निभाती है| इतिहास की पाठ्यपुस्तकों को सूचनाओं का केंद्र माना जाता है| माना जाता है कि इतिहास की पाठ्यपुस्तकों द्वारा विद्यार्थियों के मस्तिष्क में तथ्यों का अंबार लगाया जाता है| पाठ्यपुस्तकों में मात्र तथ्यों और सूचनाओं का संग्रह होने के कारण इतिहास की विषय वस्तु नीरस तथा उबाऊ लगती है| 2005 से पूर्व निर्मित पाठ्यपुस्तक के औपचारिक रूप में बाल केन्द्रित लगती थी, वास्तविक मायने में नहीं 2005 से पूर्व इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का एक-एक पृष्ठ अवधारणाओं से लदा होता था जिससे विद्यार्थियों पर पाठ्यचर्या का बोझ बढ़ गया और इस स्कूली पढ़ाई बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के निर्माणात्मक वर्षों में उनके शरीर में मस्तिष्क पर तनाव स्रोत बन गई|

इसलिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में "शिक्षा बिना बोझ" के (1993) की रिपोर्ट की अनुसंशाओं के आधार पर स्कूली पाठ्यचर्या के सुपरिचित क्षेत्र सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन के लिए सुझाव दिए |

(Webiliography 1)

सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु का लक्ष्य जानी पहचानी सामाजिक सच्चाई समीक्षात्मक जांच तथा उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक जागरूकता का संवर्धन, होना चाहिए विद्यार्थियों के अपने जीवन-संदर्भों के सम्बन्ध में नए आयामों और नए पहलुओं को जगह दी जा सकती है| एक सार्थक पाठ्यचर्या के लिए सामग्री चयन जो विद्यार्थियों में समाज के प्रति आलोचनात्मक समझ का विकास करें यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है|

सामाजिक विज्ञान को अनउपयोगी विषय समझा जाता है और उनको विज्ञान से कम महत्व दिया जाता है| अतः इस पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है कि वह सामाजिक सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक समझ के विकास में मदद करें जिनकी आज की परस्पर निर्भर होती जा रही दुनिया में आवश्यकता है| जिससे राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ से जूझने में मदद मिले ऐसा माना जाता है कि सामाजिक विज्ञान में केवल सूचनाएँ दी जाती है और वह पाठ केंद्रित होती हैं इसलिए विषय वस्तु में परीक्षा के लिए तथ्यों को अंबार लगाए जाने की बजाय उसकी संज्ञानात्मक समझ विकसित किए जाने की आवश्यकता है| इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए की अवधारणाओं की समझ और सामाजिक राजनीतिक यथार्थ के विश्लेषण की क्षमता का विकास पर्याप्त हो न कि केवल बिना व्याख्या के तथ्यों को रट लिया जाये| यह पहचानने की आवश्यकता है कि सामाजिक विज्ञानों में विज्ञान और शारीरिक विज्ञान की तरह वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है| साथ ही यह बताए जाने की आवश्यकता है कि किस प्रकार सामाजिक विज्ञानों द्वारा अपनाई गई पद्धति विशिष्ट होती हैं लेकिन प्राकृतिक विज्ञान के किसी भी रूप में कमतर नहीं है|

(Webiliography 2)

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है | वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है| सामाजिक विज्ञान शिक्षण में अनेक प्रचलित धारणाओं ने जन्म ले लिया है जिनका विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है|

सामाजिक विज्ञान का एक प्रचलित दृष्टिकोण यह है कि यह एक अनुपयोगी विषय है| इसके कारण विद्यार्थियों के स्वाभिमान में कमी आती है जिससे पूरी कक्षा प्रभावित होती है, तथा अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही इसके विषयांगों को ग्रहण करने में अरुचि का अनुभव करते हैं| स्कूली शिक्षा की आरंभिक व्यवस्था से ही प्रायः विद्यार्थियों के दिमाग में यह बैठा दिया जाता है कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान से बेहतर विषय है और प्रतिभाशाली विद्यार्थीयों की संपत्ति है| इसलिए इस तथ्य को उजागर करने की आवश्यकता है कि सामाजिक विज्ञान सामाजिक, सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक कौशल प्रदान करता है जो कि बढ़ते अन्योन्याश्रित विश्व से सामंजस्य स्थापित करने और उसके संचालन को निर्धारित करने वाली राजनीतिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं से निपटने के लिए आवश्यक है|

ऐसा माना जाता है कि सामाजिक विज्ञान मात्र सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है और पूरी तरह मूल पाठों पर केंद्रित है, जिन्हें मात्र परीक्षाओं के लिए कंठस्थ करने की आवश्यकता है| इन पाठों की विषय वस्तु को दैनिक वास्तविकताओं से असंबद्ध माना जाता है, जबकि इन्हें उस दुनिया से अधिक से अधिक सम्बद्ध होना चाहिए जिसमें हम रह रहे हैं| साथ ही इसे भूतकाल के विषय में अनावश्यक जानकारियाँ देने वाला भी माना जाता है| यह भी अनुभव किया जाता है कि परीक्षा पत्र इन व्यर्थ के तथ्यों

को कंठस्थ करने का प्रतिफल देते हैं जिसमें बच्चों की वैचारिक समझ को पूरी तरह अनदेखा किया जाता है| समाजिक विज्ञान में सूचनाओं के अत्यधिक भार को कम करने की दिशा में किसी भी प्रयास के साथ-साथ प्रचलित परीक्षा प्रणाली की समीक्षा भी की जाए|

*(**Webiliography 3**) (सामाजिक विज्ञान का शिक्षण (2007)*एनसीईआरटी)

यह एक धारणा है कि सामाजिक विज्ञान विषय में विशिष्टता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वांछित रोजगार विकल्प उपलब्ध नहीं हैं| साथ ही यह भी अनुभव किया जाता है कि सामाजिक विज्ञान उन सभी कौशलों से रहित है जिनकी वास्तविक दुनिया में कार्य निष्पादन के लिए आवश्यकता है| यह महत्वपूर्ण है कि सामाजिक विज्ञान के महत्व को मात्र तेजी से फैलते सेवा क्षेत्र के रोजगारों में इसकी बढती प्रासंगिकता द्वारा ही नहीं बल्कि एक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक मस्तिष्क की नीव तैयार करने में इसकी अनिवार्यता को दर्शाते हुए बताया जाना चाहिए|

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है | इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र का लाभ होगा|

1.3 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये| शोध वस्तुतः ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है| शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है| उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सौद्देश्य सुनियोजित होते हैं|

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में ऐसी विधियां अपनाई जाना जरूरी हैं जो सर्जनात्मकता, सौंदर्यबोध और समालोचनात्मक दृष्टिकोण को पैदा करती हों, साथ ही समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने के लिए विद्यार्थियों को अतीत और वर्तमान के बीच संबंधों को जोड़ने में समर्थ बनाती हों| सामाजिक विज्ञान शिक्षण में तस्वीरें, ग्राफ, चार्टों, नक्शो तथा पुरातात्विक और भौतिक संस्कृतियों की अनुकृतियों समेत श्रव्य- दृश्य सामग्रियों का इस्तेमाल करना अत्यंत आवश्यक है किंतु सवाल यह है कि क्या वर्तमान सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इनका उपयोग हो रहा है या नहीं? यह तो शोध के परिणाम का विषय है |

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सीखने की प्रक्रिया को सहभागितापूर्ण बनाने के लिए सिर्फ जानकारी प्रदान करने की परंपरा से हटकर चर्चा और बहस पर जोर देने की जरूरत है| सीखने की यह पद्धति शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को सामाजिक वास्तविकताओं से जीवंतता के साथ जोड़े रखेगी| पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं में विषयवस्तु, भाषा और तस्वीरें समझ में आने वाली, लिंग भेद के प्रति संवेदनशील और हर प्रकार की सामाजिक असामान्यताओं के प्रति आलोचनात्मक होना चाहिए| क्या वर्तमान पाठ्यपुस्तके एक बंद बक्से की तरह हैं? या एक गतिशील दस्तावेज| क्या पाठ्य पुस्तकें आगे की जांच- पड़ताल के रास्ते खोलती नजर आ रही हैं? य नहीं| यह तो शोध के परिणाम ही बताएंगे प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है|

1.4 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है **“सामाजिक विज्ञान शिक्षण : वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियां एवं भावी संभावनाएं”**

1.5 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1.5.1 सामाजिक विज्ञान शिक्षण- सामाजिक विज्ञान शिक्षण से तात्पर्य सामाजिक विज्ञान शिक्षण के किसी योजना या पैटर्न से है जिसका उपयोग पाठ्यक्रम बनाने, शैक्षणिक सामग्री बनाने, तथा कक्षा में शिक्षण को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।

1.5.1.1 सामाजिक विज्ञान- सामाजिक विज्ञान अंग्रेजी के social science का हिंदी रूपान्तर है| social science शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है social + science सोशल शब्द का अर्थ है - **सामाजिक** और साइंस (science) का अर्थ है - **विज्ञान** | इस प्रकार सामाजिक विज्ञान से अभिप्राय मानव क्रियाओं और व्यवहारों का उनके सामाजिक समूह में क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन है| मानव विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञानों में वर्गीकृत किया गया है| प्राकृतिक विज्ञानों में भौतिक विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, रसायनशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, जंतु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान इत्यादि सम्मिलित हैं और सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत वे विषय आते हैं जो मानव की उद्भव, संगठन तथा विकास से सम्बन्धित हैं| मानवीय क्रियाओं एवं उसके प्रभावों का अध्ययन इतिहास, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र एवं भूगोल इत्यादि के समन्वित रूप में सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत किए जाने लगा है | इसलिए स्कूल विषयों में सामाजिक अध्ययन विषय को विशेष महत्व दिया गया है | सामाजिक अध्ययन विषय की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों के विचार प्रस्तुत हैं –

(श्री वास्तव, रोमा एवं गौतम, आरती पृष्ठ 7)

एन.सी.ई.आर.टी. के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन मनुष्य तथा सामाजिक भौतिक वातावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है |"

एम.पी. मोफत के अनुसार, "जीने की कला बड़ी सुन्दर कला है,सामाजिक अध्ययन द्वारा ही यह ज्ञान प्राप्त होता है |"

ई.बी.वेस्ले के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञानों के आधारभूत तथ्यों का अध्ययन है|"

जरोलिमिक के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन, "मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है |"

(श्री वास्तव, रोमा एवं गौतम, आरती पृष्ठ 7)

राष्ट्रीय शैक्षिक समुदाय आयोग, के अनुसार, "सामाजिक अध्ययन वह विषय-वस्तु है जो मानव-समाज के संगठन एवं विकास से सम्बन्धित है और मनुष्य के सामाजिक समूहों के सदस्य के रूप में अध्ययन करती है |"

"Those (Studies) whose subject- matter relates directly to the organization and development of human society and, to a man as a member of social groups."

- National Educational Association's Commission

(शर्मा, आर. ए. पृष्ठ 11)

माइकल्स के शब्दों में, "सामाजिक अध्ययन का कार्यक्रम इतना विशाल होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव मिल सकें व उनका ज्ञान विस्तृत हो सके |"

शिक्षा- शब्दकोष के अनुसार, "सामाजिक विज्ञान मानव समाज के विशेष क्षेत्रों जैसे अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र से व्यवहार रखने वाला विज्ञान का एक समूह है |"

जॉन यू. माइकेलिस के अनुसार, "सामजिक अध्ययन का कार्यक्रम मनुष्य तथा अतीत,वर्तमान तथा विकसित होने वाले भविष्य के सामाजिक और भौतिक पर्यावरणों के प्रति उनके द्वारा की गयी पारस्परिक क्रिया का अध्ययन है |"*(शर्मा, आर. ए. पृष्ठ 10)*

जे.एफ.फोरेस्टर के शब्दों में, "सामाजिक अध्ययन शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का एक अंश है जिसका ध्येय तथ्यात्मक सूचनाओं को संग्रहित या एकत्रित करने की अपेक्षा मानदण्डों,वृत्तियों, आदर्शो तथा रूचियों का निर्माण करना है |"

"Social studies are part of the modern approach to education, the aim of which is the formation of standards, attitudes, ideals and interests rather than the accumulation of factual information" - j. f. Forrester

(शर्मा, आर. ए. पृष्ठ 10)

जेम्स हेमिंग के शब्दों में, "सामिजिक अध्ययन के अन्तर्गत हम जिस तथ्य का अध्ययन करते है, वह मनुष्य का जीवन है | सामाजिक अध्ययन में प्रमुख रूप से इन प्रसंगों का अध्ययन किया जाता है – मनुष्य ने अतीत तथा वर्तमान में अपने वतावरण से किस प्रकार संघर्ष किया, उसने अपनी शिक्तियों का उपयोग या दुरूपयोग कैसे किया तथा उसने अपने संसाधनों, विकास तथा सभ्यता की आवश्यक एकता को किस प्रकार प्राप्त किया |"

"What we study in social studies is the life of man on some particular place, at some particular time man's struggle with his environment yesterday and today, man's use or misuse of his powers and resources, his development, the essential unity of civilization these are main themes of social studies."

- **Jamws Hemmimg:** 'teaching of social studies in secondary schools.'

(शर्मा, आर. ए. पृष्ठ 10)

1.5.1.2 शिक्षण

शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बहुत से कारक शामिल होते हैं। सीखने वाला जिस तरीके से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार और कौशल को समाहित करता है ताकि उसके सीखने के अनुभवों में विस्तार हो सके, वैसे ही ये सारे कारक आपस में संवाद की स्थिति में आते रहते हैं।पिछली सदी के दौरान शिक्षण पर विभिन्न किस्म के दृष्टिकोण उभरे हैं। इनमें एक है ज्ञानात्मक शिक्षण, जो शिक्षण को मस्तिष्क की एक क्रिया के रूप में देखता है। दूसरा है, रचनात्मक शिक्षण जो ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में की गई रचना के रूप में देखता है। इन सिद्धांतों को अलग-अलग देखने के बजाय इन्हें संभावनाओं की एक ऐसी श्रृंखला के रूप में देखा जाना चाहिए जिन्हें शिक्षण के अनुभवों में पिरोया जा सके। एकीकरण की इस प्रक्रिया में अन्य कारकों को भी संज्ञान में लेना जरूरी हो जाता है- ज्ञानात्मक शैली, शिक्षण की शैली, हमारी मेधा का एकाधिक स्वरूप और ऐसा शिक्षण जो उन लोगों के काम आ सके जिन्हें इसकी विशेष जरूरत है और जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं।

(Webiliography 4)

विभन्न विद्वानों द्वारा शिक्षण की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गई हैं -

स्मिथ के अनुसार, “शिक्षण का उद्देश्य निर्देशित किया है|”

रॉयन्स के अनुसार, “दूसरों को सिखाने के लिए दिशा-निर्देश देने तथा अन्य प्रकार पर उन्हें निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहा जाता है|”

गेज के अनुसार, “शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है, जिसका उद्देश्य है दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना है|”

स्किनर के अनुसार, “शिक्षण पुनर्बलन की Contingencies का क्रम है |”

जेम्स एम थाइन के अनुसार, "समस्त शिक्षण का अर्थ है सीखने में वृद्धि करना|"

क्लार्क के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है, जिसके प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिए की जाती है जिससे छात्रों के व्यवहारों में परिवर्तन लाया जा सके|"

(बर्णवाल, सुमित कुमार एवं अन्य पृष्ठ 444)

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक विज्ञान शिक्षण से तात्पर्य औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त जूनियर हाईस्कूल विद्यालयों में सामाजिक विज्ञान (इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र) के शिक्षण (पठन-पाठन प्रक्रिया) से है |

1.5.2 वर्तमान

इस समय जो भी हम देख रहे हैं, सुन रहे है, और महशूश करने के बाद जो भी इस समय में कर रहे हैं, वही वर्तमान है। ***(Webiliography5)***

प्रस्तुत लघु शोध में 'वर्तमान' से तात्पर्य जूनियर हाईस्कूल कक्षाओं के शैक्षिक सत्र : 2016-2017 से है|

1.5.3 परिदृश्य [scenario]

According to Business Dictionary - "Internally consistent verbal picture of a phenomenon, sequence of events or situation, based on certain assumptions and factor chosen by its creator." ***(Webiliography6)***

प्रस्तुत लघु शोध में 'परिदृश्य' से तात्पर्य सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी औपचारिक एवं अनौपचारिक वातावरण से है |

1.5.4 चुनौतियाँ

चुनौतियों से अभिप्राय बाधा, अड़चन एवं समस्याओं से है|

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में **'चुनौतियों'** से अभिप्राय सामाजिक विज्ञान शिक्षण में आने वाली बाधाओं, कठिनाइयों, एवं समस्याओं से है|

1.5.5 भावी

Swiftutors.com के अनुसार- "भावी से तात्पर्य- आने वाला पल जब तक नहीं आता है उसकी निश्चितता सदैव अनिश्चित बनी होती है क्योंकि भविष्य काल का एक हिस्सा है, उसे भविष्य काल कहते हैं |" ***Webiliography7)***

प्रस्तुत लघु शोध में **'भावी'** से तात्पर्य वर्ष 2016-2017 के बाद आने वाले समय से है |

1.5.6 सम्भावनाएँ

www.hindi2dictionary.com के अनुसार- "सम्भावना का अर्थ- किसी घटना या बात के सम्बन्ध में वह स्थिति जिसमें उसके पूर्ण होने की आशा हो |" ***(Webiliography8)***

प्रस्तुत लघु शोध में **'सम्भावना'** से तात्पर्य भविष्य में सामाजिक विज्ञान शिक्षण सम्बन्धी सुधारों के अनुमान से है |

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में आरेखीय एवं दृश्य सामग्री का अध्ययन करना |
- ❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करना |
- ❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु की बोधगम्यता का अध्ययन करना |
- ❖ उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड की इतिहास पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन करना |
- ❖ इतिहास शिक्षण से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना |
- ❖ इतिहास शिक्षण के किसी एक प्रकरण का सुझावात्मक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करना |
- ❖ इतिहास पाठ्यक्रम को रुचिकर बनाने हेतु सुझाव देना |
- ❖ इतिहास पाठ्यक्रम को अद्यतन (Update) करने हेतु सुझाव |

1.7 शोध विधि

प्रस्तुत शोध में अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति अपनाई गई है | अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि वास्तव में सामाजिक अनुसन्धान की एक महत्वपूर्ण विधि है | अंतर्वस्तु विश्लेषण का विधि की शुरुआत लगभग सन ***1926*** में सबसे पहले ***मेल्कोम*** ने समाचार-पत्रों के अपने अध्ययन के माध्यम से किया था | इस अध्ययन में समाचार-पत्रों की भाषा का विश्लेषण करके कुछ महत्वपूर्ण परिणाम निकाले थे | इसकी सहायता से गुणात्मक तथ्यों का परिमाणात्मक वर्णन सम्भव है | अंतर्वस्तु विश्लेषण के द्वारा गुणात्मक सामाजिक सामग्री की वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ तथ्यों में बदला जाता है | अंतर्वस्तु विश्लेषण द्वितीय सामग्री से सूचनाओं अथवा तथ्यों को संकलित करने की एक महत्वपूर्ण विधि है | मीडिया के क्षेत्र में शुद्ध परिणामों

एवं तर्कपूर्ण संरचना के लिए वैज्ञानिक विधि का होना महत्त्वपूर्ण माना जाता है इसी श्रेणी में अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति भी आती है | प्रस्तुत शोध में अंतर्वस्तु पद्धति एक नए आयाम को सामने लाती है |

(अग्रवाल, सौरभ पृष्ठ 111)

अंतर्वस्तु विश्लेषण की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्न है-

गोल्डसन के अनुसार, "अंतर्वस्तु विश्लेषण का उद्देश्य दी गई अंतर्वस्तु कि श्रेणियों की व्यवस्था के रूप में गणनात्मक वर्गीकरण करना है | ताकि अंतर्वस्तु से सम्बन्धित विशिष्ट उपकल्पनाओं से सम्बद्ध तथ्य प्राप्त किए जा सकें|" *(अग्रवाल, सौरभ पृष्ठ 112)*

बनार्ड बेरेलसन के अनुसार, "अंतर्वस्तु विश्लेषण संचार के प्रगट अन्तर्वस्तु के वस्तुनिष्ठ, क्रमबद्ध तथा परिमाणात्मक वर्णन के लिए अपनाई जाने वाली एक शोध प्रविधि है |" *(अग्रवाल, सौरभ पृष्ठ 112)*

कप्लान के अनुसार "अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि एक दी हुई बढ़ती के अर्थों में की गयी एक क्रमबद्ध एवं गणनात्मक व्याख्या करने का प्रयास करती है|" *(अग्रवाल, सौरभ पृष्ठ 112)*

1.8 अध्ययन का सीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है | कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है | समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है | समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है | सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है | शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है |

- प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अन्तर्गत केवल इतिहास विषय तक सीमित है |

- प्रस्तुत अध्ययन एन.सी.ई.आर.टी.एवं उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद की इतिहास पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रहेगा |
- प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 6-8 तक सीमित रहेगा |

1.8 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

परिवर्तन प्रकृति का नियम है | शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं है | शिक्षा प्रणाली में भी समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है | पूर्व में जहाँ अधिगम प्रक्रिया विषय केंद्रित थी वही आज बाल केंद्रित हो गई है | शिक्षण प्रणाली में परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षण के मानक भी बदले है | वर्तमान सामाजिक विज्ञान शिक्षण प्रणाली के पाठ्यक्रम में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य समन्वय का अभाव है | वर्तमान तकनीकी युग में विद्यार्थी शिक्षक से जैसी अपेक्षा रखते हैं, शिक्षक उसकी पूर्ति नहीं कर पाते जिसके कारण शिक्षार्थी पर शिक्षा का एकांगी प्रभाव ही

पड़ता है | आज की हमारी सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या की समस्या है कि वह विषय-प्रसंगों पर बहुत ज्यादा बल देती है परन्तु सीखने की प्रक्रिया पर बहुत कम ध्यान देती है | विषय-प्रसंगों की परवाह किए बगैर यदि अध्ययन प्रक्रिया हमें प्रेरित करे कि हम अपनी दुनिया को जाँचे-परखें, एक दूसरे के आस-पास के लोगों से चर्चा करें, ख़ुद अपने परिवेश में इतिहास को खोजें तो इस तरह के अनुभव से हम रटने की जगह अच्छे ढंग से सीख सकेंगे तथा इस प्रकार का अनुभव अधिक समय तक स्थायी रहेगा |

आज सामाजिक अध्ययन की नई किताबों में पिछली किताबों की तुलना में निश्चित ही सुधार हुआ है परंतु यह पूर्ण नहीं है, सबसे बड़ा अंतर किताबों की गुणवत्ता और उसके रूप रंग में आया है | ज्यादा से ज्यादा रंग इस्तेमाल किए गए हैं | चित्र और कार्टून भी ज्यादा हैं और रेखाचित्र भी बेहतर कोटि के हैं | यह सब करते हुए किताबों की विषयवस्तु को और अधिक बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है | किंतु

आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्यपुस्तकों को और अधिक रुचिकर बनाया जाये, तथा उनमें दृश्य श्रव्य सामग्री का अधिकाधिक समावेश किया जाये |

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.0 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसंधान साहित्य की संज्ञा दी जाती है| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता का अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को और बढ़ाने में सहायता मिलती है | एक अनुसंधान दूसरे अनुसंधान के लिए सहायक सिद्ध होता है| इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है| ***(गुप्ता, एस. पी.पृष्ठ 54)***

किसी भी अनुसंधान कार्य को उचित रुप से संपादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसंधान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस एवं वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है| तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसंधान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है| सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है |

- ❖ किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिन्हें महत्वपूर्ण प्रमाणित किया जा चुका है|

❖ पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है|

❖ किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है|

❖ लिए गए अनुसंधान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा, कौन से उपकरण उचित होंगे, किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है|

❖ लिए गए अनुसंधान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है|

❖ समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है|

❖ यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है|

2.1 भारत में हुए शोध

2.1.1 फौजदार, हेमलता **(2015)** ने अपने अध्ययन *"एन.सी.ई.आर.टी. की इतिहास पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की भूमिका*" में पाया कि पाठ्यपुस्तकों में मात्र तथ्यों और सूचनाओं का संग्रह होने के कारण इतिहास की विषय वस्तु नीरस तथा उबाऊ लगती है| 2005 से पूर्व इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का एक-एक पृष्ठ अवधारणाओं से लदा होता था| जिससे विद्यार्थियों पर पाठ्यचर्या का बोझ बढ़ गया और स्कूली पढ़ाई बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के निर्माणात्मक वर्षों में उनके शरीर व मस्तिष्क पर तनाव का स्रोत बन गई| सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को सूचना तथा तथ्यों की पोथी बनाने की बजाय संज्ञानात्मक समझ विकसित करने का माध्यम बनाना चाहिए | पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण इस

प्रकार हो कि वे जिज्ञासा जगाएं तथा आगे अध्ययन के द्वार खोलें | राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में शब्द आधारित पाठ के स्थान पर ऐसे पाठों की हिमायत करती है | जिनमें गतिविधियां चित्र तस्वीरें मानचित्र कार्टूनों का समावेश हो तथा वे विषय वस्तु के अभिन्न अंग चित्र तस्वीरें मानचित्र विषय वस्तु को रोचक तथा आनंददायक बना देती है | ***(Webiliography9)***

2.1.2 राजशेखरन, पी., आनंद के. (2007) *"माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के बीच सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में शिक्षण योग्यता एवं अभिवृत्तियों के बीच सम्बन्ध का अध्ययन|"*

उद्देश्य

1. वैश्विक दृष्टिकोण के बीच सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में शिक्षण योग्यता एवं अभिवृत्ति का मापन|
2. महिलाओं, पुरुषों, स्नातक उपाधि धारकों एवं अध्यापन अनुभवों के बीच सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में शिक्षण योग्यता एवं अभिवृत्ति का मापन|

अध्ययन की विधियाँ

सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को अपनाया गया है| अध्ययन में लिंग, योग्यता और अध्यापन के अनुभव वर्ष जननान्कीय चर थे|

अध्ययन के नमूने

यादृच्छिक नमूना तकनीकी के आधार पर अनुसंधानकर्ता ने मुदैर कामराज विश्वविद्यालय के 200 अध्यापकों को उनकी विषय पद्धति के लिए चुना है|

उपकरण

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में, एक पैमाना शिक्षण योग्यता है तथा दूसरा अभिवृत्ति है|

अध्ययन के निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के मध्य सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में शिक्षण योग्यता एवं अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है|
2. माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में पुरुषों में अभिवृत्ति एवं योग्यताओं के बीच अर्थपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध है|
3. माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में महिलाओं में योग्यता और अभिवृत्ति के बीच अर्थपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध है|
4. माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दिशा में मास्टर उपाधि धारकों में योग्यता और अभिवृत्ति के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध है| ***(Webiliography10)***

2.1.3 रेड्डी, लोकान्धा जी,; कुस्मा और राजगुरु (2008) *"माध्यमिक स्कूल में दृष्टिहीन बच्चों में सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को सिखाने में मूर्त सामग्री (ब्रेल) और ऑडियो कैसेट की सापेक्षिक प्रभावशीलता का अध्ययन|"*

उद्देश्य

1. दृष्टिहीन बच्चों की उपलब्धि में सामाजिक विज्ञान अवधारणाओं में मूर्ति सामग्री (ब्रेल) और बोलती किताबें (ऑडियो कैसेट) का प्रभावशाली अध्ययन|
2. मूर्त सामग्री (ब्रेल) तथा ऑडियो कैसेट के द्वारा सामाजिक विज्ञान में नेत्रहीन बच्चों के विभिन्न समूहों (लड़के, लड़कियां, ग्रामीण नेत्रहीन बच्चे, शहरी नेत्रहीन बच्चे, पूर्णता नेत्रहीन बच्चे, धीमी दृष्टि वाले बच्चे, जन्मांध बच्चे, अर्जित नेत्रहीन बच्चे, तथा ₹10000 से कम वार्षिक आय वाले माता-पिता के साथ रहने वाले नेत्रहीन बच्चों के परिवार वाले बच्चे) के सीखने की उपलब्धि में महत्वपूर्ण अन्तर का पता लगाना |

विधि

54 नेत्रहीन बच्चे (27 लड़के तथा 27 लड़कियों) के नमूने तमिलनाडु राज्य के कोयम्बटूर जिले के 6 एकीकृत शिक्षा कार्यक्रम से यादृच्छिक विधि द्वारा लिए गये है| उनको आगे दो बराबर समूह में बाँटा गया| तीन महीने के लिए एक समूह को मूर्त सामग्री (ब्रेल) की तरह तथा दूसरे को ऑडियो कैसेट की तरह व्यवहार किया गया | तथ्यों को प्राप्त करने के लिए उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा आकड़ों के विश्लेषण के लिए सांखिकीय तकनीकी 'टी-टेस्ट' का प्रयोग किया गया |

अध्ययन के निष्कर्ष

1. अध्ययन से पता चला कि माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को सीखने में दोनों मूर्त सामग्री (ब्रेल) तथा ऑडियो कैसेट प्रभावी है|
2. ब्रेल माध्यम पर ऑडियो कैसेट थोड़ी लाभप्रद मिली, लेकिन अन्तर सांख्यकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं थी|
3. सामाजिक विज्ञान अवधारणाओं को सीखने में कोई लैंगिग अन्तर नहीं पाया गया|
4. नेत्रहीन बच्चों के सीखने की उपलब्धि में विभिन्न पृष्ठभूमि पर चर बहुत अलग नहीं पाये गये|
5. सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को सीखने में संकलनात्मक नेत्रहीन बच्चों ने ब्रेल माध्यम के सामने उसके प्रतिवस्तु की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया| ***(Webiliography10)***

2.1.4 बोधे, यू. वाई.,(2002) "*सोलापुर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर में इतिहास शिक्षण और सीखने की समस्याओं का समालोचनात्मक अध्ययन|"*

उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर में इतिहास शिक्षण पर इतिहास शिक्षकों की पेशेवर और शैक्षिक योग्यता के प्रभावों का अध्ययन|
2. इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियों के समुचित उपयोग का अध्ययन|

3. माध्यमिक स्तर पर वर्तमान स्थिति और इतिहास की शैक्षिक सामग्री का अध्ययन|
4. इतिहास शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन का अध्ययन करना|
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास सीखने में समस्याओं का अध्ययन|

विधि

सोलापुर जिले के जूनियर स्कूलों की आबादी और इतिहास शिक्षक जिसमें सभी मराठी माध्यम के कॉलेजों से सभी इतिहास शिक्षकों को शामिल किया गया है| साक्षात्कार के लिए प्रधानाचार्य और छात्रों का चयन यादृच्छिक नमूना पद्धति द्वारा किया गया है| प्रत्येक कक्षा (11^{th} और 12^{th}) से 2 विद्यार्थियों का चयन किया गया| विशेषज्ञ और अनुभवी इतिहास शिक्षकों को गैर संभाव्य विधि से चयन किया गया है| उपकरण और तकनीकी के लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया| शोधकर्ता ने साक्षात्कार के लिए 19 प्रधानाध्यापकों तथा 33 इतिहास शिक्षकों को चुना है| एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत सांख्यकीय द्वारा किया गया है|

निष्कर्ष

1. इतिहास के तीन शिक्षकों में से एक ने अपने स्नातक स्तर पर विषय को नहीं पढ़ा है|
2. लगभग सभी इतिहास शिक्षकों ने व्याख्यान पद्धति के बाद प्रश्नोत्तर का प्रयोग किया है|
3. बहुत कम शिक्षकों ने स्रोतों और समूह शिक्षण, संगोष्ठी जैसे सहभागिता विधियों का प्रयोग किया है|
4. अधिकांश विद्यालयों में इतिहास शिक्षण को कम प्राथमिकता दी है क्योंकि इतिहास में योजना पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री की कमी पाई गयी है| ***(Webiliography10)***

2.1.5 कोलांगी, ए,(2010) *"अलियापुर जिले में उच्चतर माध्यमिक छात्रों के इतिहास सीखने के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"*

विधियाँ

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया| यह बड़ी संख्या में आंकड़ों को एकत्र करने की अच्छी विधि है| यह स्पष्ट रूप से परिभाषित समस्याओं और निश्चित उद्देश्यों से सम्बन्धित है | इसके लिए एक कल्पनाशील योजना, एक सावधानी पूर्वक विश्लेषण तथा आंकड़ों की व्याख्या और निष्कर्षों की तार्किक और कुशल लेखन की आवश्यकता होती है| शोधकर्ता ने इतिहास सीखने के प्रति अलियापुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के अभिवृत्ति को चुना|

नमूने

इस अध्ययन के लिए अलियापुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के इतिहास के छात्रों को लिया गया है| वर्तमान अध्ययन के लिए यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया| आकड़ों के लिए जनसंख्या के रूप में 300 उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों को लिया गया जो एक राजकीय माध्यमिक स्कूल, दो सरकारी सहायता प्राप्त उच्च माध्यमिक स्कूलों, एक मैट्रिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल तथा चार सह-शिक्षा विद्यालयों को चुना गया है| नमूने के चयन के लिए अनुपातिक यादृच्छिक नमूना तकनीकी को अपनाया गया है|

अध्ययन के निष्कर्ष

इस अध्ययन से पता चलता है कि अलियापुर जिले में उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के इतिहास सीखने के प्रति अभिवृत्ति उच्च है, हो सकता है अलियापुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को इतिहास और उसके प्रभाव के प्रति पर्याप्त जागरूकता रही हो| ***(Webiliography10)***

2.1.6 खान, महमूद (2013) ने अपने अध्ययन **“***ऐसे हो सामाजिक विज्ञान शिक्षण”* में बताया की सामाजिक विज्ञान विषय की पुस्तकों में न सिर्फ विषयवस्तु को जिंदगी के अनुभवों के साथ पिरोया जाना चाहिए, बल्कि उनमें इस बात का भी समावेश होना चाहिए कि शिक्षक उस विषय वस्तु के साथ किस प्रकार के शिक्षणशास्त्र का इस्तेमाल करे जिससे बच्चों को उनके कक्षा-कक्ष अधिक रुचिकर व आनंदायक लगे| सामाजिक विज्ञान की मौजूदा स्थितियों में सुधार के लिए शायद हमे शिक्षण सामग्री की तुलना में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के तरीकों पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है| पिछले कुछ सालों में देश के समाज वैज्ञानिकों ने गंभीर चिंतन कर अपने नए विचारों से शिक्षण की परंपरागत शैली में बदलाव लाने के लिए प्रयास किए हैं| इन प्रयासों से जो समझ में आता है उनके हिसाब से कुछ मूल-भूत परिवर्तन हमें अपने शिक्षण में लाने होंगे जैसे -विषय की गहन जानकारी, विकल्पों के बारे में सोचने का अभ्यास, खोजी प्रवृत्ति का विकास, शैक्षिक भ्रमण, प्रोजेक्ट कार्य, बच्चों की स्कूली शिक्षा को बाहरी ज्ञान से जोड़ना, बच्चों को रटंत प्रवृत्ति से बाहर लाना, शिक्षण मातृभाषा में करवाने की प्राथमिकता देना, शिक्षण में स्थानीयता को उभारना| *(Webiliography11)* (खोजें और जाने पृष्ठ 13)

2.1.7 राय, कुमकुम (2016) *“सामाजिक विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकें”* प्रस्तुत लेख में लेखिका ने बताया की हाल ही में (2016) राजस्थान सरकार ने सरकारी विद्यालयों के लिए पाठ्यपुस्तकों की एक नई श्रृंखला प्रकाशित की है| यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके ‘प्राक्कथन’ के अनुसार (उदाहरण, सामाजिक विज्ञान, कक्षा-6 पृ.iii),यह 2005 की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और 2009 के शिक्षा के अधिकार कानून को व्यवस्थित करने के प्रयास है| इस लेख में कुछ बिंदुओं के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षण करने का प्रयास किया है जैसे- चित्रों का प्रयोग, सवाल और सोच, इतिहास की अवधारणा, समाज की समझ| बाल पुस्तकों की एक आवश्यकता अंग चित्रों से हैं इस श्रंखला में कई प्रकार के चित्रों का प्रयोग हुआ है अनेक चित्र साफ और आकर्षित हैं लेकिन कुछ चित्र विशेषकर कक्षा 6 से 8 की

पुस्तकों में आए स्पष्ट हैं सवाल और इस प्रकार इतिहास की अवधारणा पर चर्चा करते हुए लेखक ने लिखा है कि कक्षा तीन के प्रारंभ से ही इतिहास एवं सांस्कृतिक गौरव की बात की गई है और इसकी पुनरावृत्ति हरे कक्षा के प्राप्त कथन में की गई है साथ ही पाठ्यपुस्तक में वीर पुरुषों एवं वीरांगनाओं की जीवनियों को भी बालकों को केंद्र में रखते हुए सम्मिलित किया गया है|***(Webiliography12)शिक्षा विमर्श*,पृष्ठ 38**

2.1.8 नरोन्हा, अंजली (2011) "*लोकतंत्र के लिए शिक्षा–स्कूलों में सामाजिक विज्ञान शिक्षा की प्रासंगिकता*"

स्कूलों में वृहद स्तर पर लोकतंत्रात्मक सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या और शिक्षण के व्यापक कार्यान्वन के द्वारा ही किसी लोकतांत्रिक समाज को बनाए रखा जा सकता है और उसमें गुणात्मक विकास किया जा सकता है| कोई भी दूसरा विषय इस भूमिका को नहीं निभा सकता| समालोचना पर आधारित चिंतनशील सामाजिक विज्ञान अध्ययन व अध्यापन की प्रमुख प्रासंगिकता यही है| सामाजिक विज्ञान की शिक्षा न केवल समालोचनात्मक व चिंतनशील लोकतांत्रिक नागरिकों के गुणों का विकास करेगी बल्कि उनके भीतर किसी भी कार्यक्षेत्र में समूह में रहकर काम करने की क्षमता तथा लगातार बदलती दुनिया में विवेचनात्मक रूप से विवेकपूर्ण चुनाव करने के लिए क्षमता भी पैदा करेगी|

(***Webiliography13)** *(लर्निंग कर्व पृष्ठ स. 26)*

2.2 विदेशों में हुए शोध

2.2.1 हरमैन, विलियम, ई. (2009) "सामाजिक विज्ञान परिकल्पना के माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम मनोविज्ञान पेपर,आई -कान 28 विज्ञान फिक्शन सम्मेलन में ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया|" **HERMAN, WILLIAM, E.** The Study Entitled "Teaching and Learning Psychology through an Analysis of Social Science Fiction" Online Submission, Paper Presented at the I-CON 28 Science Fiction Convention.2009.

संक्षेप

यह पेपर 3-5 अप्रैल 2009 को लॉन्ग आइसलैंड (न्यूयॉर्क शहर के पास) में आयोजित आइ-कॉन 28 विज्ञान परिकल्पना सम्मेलन में विज्ञान परिकल्पना और शिक्षण विधियों के सत्र के दौरान एक पैनलिस्ट के रूप में तैयार किया गया है| लेखक के अनुसार, मानव व्यवहार के बारे में बेहतर समझने के लिए मनोविज्ञान सिद्धांत, शोध निष्कर्ष, और वैज्ञानिक विचारों को कैसे लागू किया जा सकता है तथा उस बारे में गहन समझ को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर एक ऑनर्स कोर्स में सामाजिक विज्ञान परिकल्पना के कार्य को कैसे किया जाता है। कल्पनाशील साहित्य को एक कलात्मक और बौद्धिक दृष्टिकोण से गंभीर रूप से जांच की जाय ताकि छात्रों को मनोवैज्ञानिक सामग्री की स्पष्ट और कभी-कभी अंतर्निहित उपस्थिति का पता लग सके। इसके आलावा कक्षा में सामाजिक विज्ञान परिकल्पना और अनुकरणीय कहानियों की रूपरेखा, जो स्वयं को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए विशेष रूप से अच्छी तरह बढ़ावा देते हैं, बताई जाये डेविड ए काइल द्वारा लिखी गई लघु कहानी "डेडिएर स्पाइस " (Deadlier Specie) की एक स्थिति को उदहारण के रूप में विश्लेषण गया। इस पेपर का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि उच्च शिक्षा के स्तर पर सामाजिक विज्ञान परिकल्पना के आलोचनात्म विश्लेषण के माध्यम से मनोविज्ञान शिक्षण के स्तर को बढ़ाया जा सकता है। (*Webiliography10)*

2.2.2 हार्विटज, ऐन. "कल के नागरिक निर्मित करना: सारे संसार में सामाजिक विज्ञान शिक्षण का संक्षिप्त सर्वेक्षण|"

सारांश

इस लेख में लेखिका ने सामाजिक विज्ञान शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य उजागर करते हुए कहा कि पूरी दुनिया की तस्वीर कुछ ऐसी है जिसमें सामाजिक विज्ञान "अधिक ठोस" विषयों से महत्व की दृष्टि से पीछे रह जाते हैं | अभी समझदारी इसी में प्रतीत होती है कि यदि कोई देश वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्पर्धा करना चाहता है तो उसकी शिक्षा व्यवस्था को अपने कामगारों को संख्याओं और शब्दों को समझने के लिए तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है | आज जब देश निरंतर कम पड़ती जा रही वैश्विक सम्पदा में अपना हिस्सा बढ़ाने के लिए होड़ कर रहे हैं, तब ऐसे सक्रिय नागरिकों, जिन्हें इतिहास, संस्कृति और मानवीय व्यवहार की बारीकी समझ हो, को तैयार करने की बात काफी हद तक एक पीछे से आने वाले विचार भर बन कर रह गया है | हाल ही में प्रकाशित वर्ल्ड सोशल साइंस रिपोर्ट 2010, जो यूनेस्को तथा इंटरनेशनल सोशल साइंस काउंसिल का साझा प्रयास है, इस बात की ओर ध्यान दिलाती है कि सामाजिक विज्ञान पर होने वाला संवाद ज्यादातर उत्तरी अमेरिका और पश्चिमी यूरोप द्वारा संचालित किया गया है | यह शायद आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि संसार की सबसे पुराने लोकतंत्र इन्ही क्षेत्रों में स्थित हैं|

सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में परम्परा और प्रकृति के बीच में तनाव संसार की अपेक्षाकृत नए लोकतंत्र जैसे अफरीका और भूतपूर्व सोवियत खेमे के देशों में दिखाई देता है | यूएस और पश्चिमी यूरोप की तुलना में इन देशों की प्रवृत्ति सामाजिक रुप से अधिक रुढ़िवादी होती है और उनमें आलोचनात्मक सोच और व्यक्तिगत सक्रियता पर जोर देने की सम्भावना नहीं होती है |(***Webiliography13)***

2.2.3 स्लीपर मार्टिन और स्ट्राम ऐडम; *"इतिहास का और खुद का सामना करना : इतिहास पढ़ना एक नैतिक उद्यम है"*

इतिहास की शिक्षा के उद्देश्यों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्राजील के एक हाई स्कूल छात्र रॉक्वेल एफ, जिन्होंने क्वीन्स, न्यूयॉर्क स्थित इंटरनेशनल हाईस्कूल में फेसिंग हिस्ट्री एण्ड अवरसैल्व्ज (इतिहास का और खुद का सामना करना)का कोर्स किया, ने समझाया वर्तमान समय के सामाजिक व नागरिक मुद्दों से सम्बन्ध जोड़ते हुए इतिहास का अध्ययन करना लगातार बौद्धिक चुनौतियां पेश करता है | घटनाओं को उनके ही ऐतिहासिक सन्दर्भ के अन्तर्गत समझना, सतही समानता रखने वाली घटनाओं के बीच सरल तुलनाएँ करने से बचना, और यह समझ पाना की किस प्रकार अतीत की घटनाओं ने वर्तमान को प्रभावित किया है या नहीं किया है | इसमें ऐतिहासिक अवधारणाओं और जाँच पड़ताल की पद्धतियों के द्वारा किसी खास इतिहास की समझ को और उसके सर्वभौमिक आशयों के मूल्यांकन को प्रभावित करना शामिल रहता है | (***Webiliography13)***

2.2.4 पेरेज़, रोक् जिमेनेज; लोपेज, जोस मारिया क्यूनाका; लिस्टन, डी मारियो फेरारस (2010) "विरासत शिक्षा: प्रायोगिक और सामाजिक विज्ञान शिक्षण के परिप्रेक्ष्य से शिक्षकों और प्रशासकों की अवधारणाओं का अन्वेषण करना"।शिक्षण और शिक्षक शिक्षा: अनुसंधान और अध्ययन का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। V26 n6 p1319-1331.

PEREZ, ROQUE JIMENEZ; LOPEZ, JOSE MARIA CUENCA; LISTAN, D. MARIO FERRERAS. "Heritage Education: Exploring the Conceptions of Teachers and Administrators from the Perspective of Experimental and Social Science Teaching". Teaching and Teacher Education: An International Journal of Research and Studies, v26 n6 p1319-1331 Aug 2010.

संक्षेप :

यह पेपर विरासत शिक्षा में एक शोध परियोजना का वर्णन करता है । प्रायोगिक और सामाजिक विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में एक अंतःविषय परिप्रेक्ष्य लाना, यह शिक्षकों और प्रशासको की विरासत की अवधारणाओं, इसकी शिक्षा और स्पेन में प्रसार का विश्लेषण प्रस्तुत करता है । एक प्रश्नावली के परिणाम के रूप में एक सांख्यिकीय विवरण उपलब्ध कराया गया है ।विरासत की अवधारणाओं और इसके शिक्षण और प्रसार दोनों के संबंध में चर के बीच के सह संबंध में संभव अनुमानों का पता लगाने के लिए एक कारक विश्लेषण किया गया । इसके परिणाम विभिन्न समूहों द्वारा आयोजित विरासत की अवधारणाओं के संबंध में शैक्षिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक प्रशिक्षण और व्यावसायिक संदर्भ की प्रासंगिकता पर जोर देते हैं।(***Webiliography10)***

2.2.5 ज़िमरमैंन, डेनिल सी(2010) "12 वीं स्तर में सामाजिक अध्ययन कक्षाओं में कुशल जीवन गुणवत्ता के लिए प्रोजेक्ट आधारित अध्ययन: एक केस स्टडी" ऑनलाइन अध्ययन, मास्टर ऑफ साइंस इन एजुकेशन, डोमिनिकन यूनिवर्सिटी कैलिफ़ोर्निया।

संक्षेप :

इस उन्नत और वैश्विक समय में, कल्पना के आधार पर कि 12 वीं कक्षा के सामाजिक अध्ययन कक्षाओं में परियोजना आधारित अधिगम हाई स्कूल सीनियर के लिए जीवन कौशल के विकास में योगदान करती है, यह शोध सफल परियोजना आधारित अधिगम कार्यक्रम के मामला अध्ययन के साथ - साथ कौशल हासिल करने में परियोजना आधारित अधिगम के तरीकों के साथ छात्रों के अनुभवों की जांच करेगा। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों को इस अनुदेशात्मक रणनीति के मूल्य को समझने में मदद करना है। रचनावाद इस अवधारणा को संदर्भित करता है कि छात्रों को अपने अनुभवों और पाठ्यक्रम के माध्यम से

तैयार किए गए विविध बुद्धिमत्ता के सिद्धांत के अनुसार सीखने से उन्हें प्रत्येक पाठ के दौरान विभिन्न तरीकों से सीखने का मौका मिलता है। अध्ययन में भाग लेने के लिए सहमत हुए तीन शिक्षकों के साथ गुणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए शोध को एकत्र करने के लिए एक साक्षात्कार का आयोजन किया गया। इन शिक्षकों ने अपने हाई स्कूल कक्षाओं में एक अद्वितीय परियोजना आधारित अधिगम प्रोग्राम बनाया था। अपने काम का मुख्य उद्देश्य हाई स्कूल के छात्रों को जीवन कौशल को पढ़ाने में सफलता का दस्तावेज बनाना था, ताकि उन्हें माध्यमिक शिक्षा के बाद कॉलेज, नौकरियों और जीवन के लिए तैयार किया जा सके। साहित्य में पाया गया की परियोजना आधारित शिक्षण पद्धति की सफलता, जीवन के लिए कौशल निर्माण के महत्व को उजागर करती है तथा शिक्षा और शिक्षण के लिए मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता होती है। निष्कर्ष यह था कि परियोजना आधारित अधिगम पद्धति में पढ़ने, समीक्षा, अनुसंधान, साक्षात्कार और अवलोकन से हाई स्कूल के सामाजिक अध्ययन कक्षाएं शिक्षण और जीवन कौशल विकसित करने में सफल रही है और माध्यमिक शिक्षा के बाद छात्रों के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने में सक्षम है। इस शिक्षण पद्धति को धन्यवाद, छात्र कौशल प्राप्त करने में सक्षम हैं जो उन्हें कॉलेज, कार्यबल और जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद करेंगे।(***Webiliography10)***

2.2.6 LOUW, JOHANN; BROWN, CHERYL; MULLER, JOHAN; SOUDIEN, (2009) "*दक्षिण अफ्रीका में सामाजिक विज्ञान शिक्षण में निर्देशात्मक प्रौद्योगिकी कंप्यूटर और शिक्षा*"

संक्षेप : यह अध्ययन एक सर्वेक्षण के परिणामों और दक्षिण अफ्रीकी विश्वविद्यालयों में सामाजिक विज्ञान में शिक्षण प्रौद्योगिकियों का वर्णन करता है। सामाजिक विज्ञान के व्याख्याताओं ने सामान्य प्रयोजनों के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) का एक अच्छी तरह से स्थापित प्रयोजन

की व्याख्या दी है।आम तौर पर शिक्षण और अधिगम दोनों में आईसीटी का उपयोग करने के मामले में उनकी उच्च आत्म-प्रभावकारिता थी। आधे व्याख्याताओं ने हाल ही में शिक्षा प्रबंधन प्रणालियों (एलएमएस) की शुरूआत के साथ आईसीटी का उपयोग करना शुरू कर दिया था जबकि अन्य आधे विश्वविद्यालयों में एलएमएस के मुख्य धारा से पहले अभ्यास की स्थापना की थी। उत्तरदाताओं के लगभग एक-चौथाई लोगों को स्वयं आईसीटी विकसित और अद्यतन करने में सक्षमता महसूस हुए, जो इंगित करता है कि समर्थन तकनीक के साथ शिक्षण का एक आवश्यक हिस्सा है ।उपयोग के विभिन्न प्रकार के संदर्भ में, वेब और पाठ्यक्रम प्रशासन पर सामग्री डालने पर ध्यान था।कौशल के शिक्षण के लिए (चाहे सूचना साक्षरता, समस्या सुलझना या महत्वपूर्ण सोच हो) आईसीटी का प्रयोग अनूठा था।विभिन्न उप-विधाओं में विभिन्न प्रकार के आईसीटी का इस्तेमाल किया गया था। व्याख्याताओं ने उन कारकों की रिपोर्ट की जो शिक्षण और सीखने के लिए आईसीटी के उनके उपयोग को कम करते थे, जैसे कि अपर्याप्त तकनीक, शैक्षणिक मुद्दे (उदाहरण साहित्यिक चोरी), और सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध होने पर विद्यार्थियों का व्याख्यान से बाहर निकलना बाधाओं को हटाने के मामले में प्रशिक्षण और सहायक गतिविधियों का उपयोग करने और लक्षित करने के लिए, यह तर्क दिया है कि उपयोगकर्ता के अध्ययन के लिए शैक्षिक सामग्री भविष्य वितरण के लिए प्रासंगिक हैं।
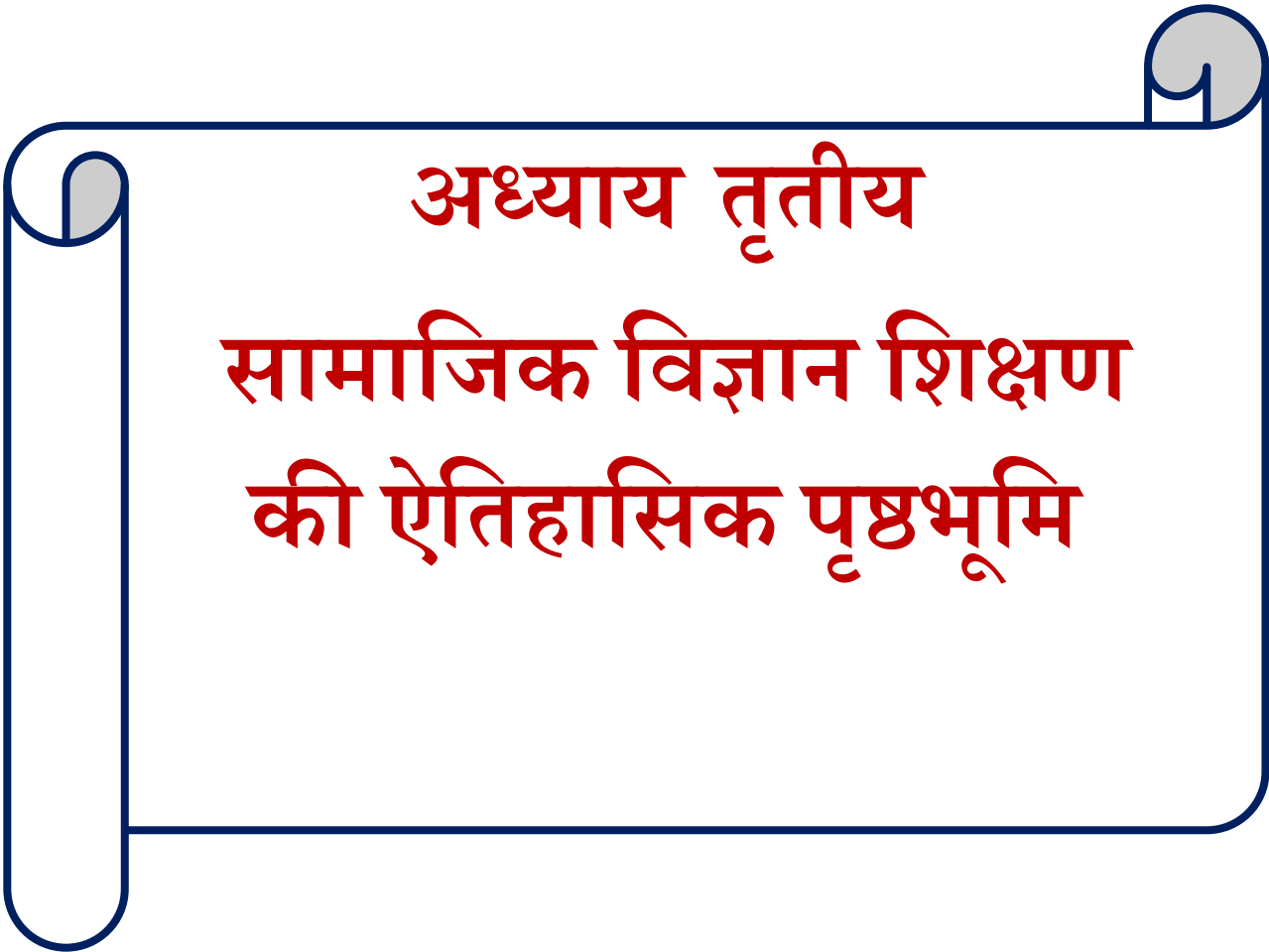
2.2.7 MITSAKOS, CHARLES L.; ACKERMAN, ANN T. (2009) "एक उपक्रम गतिविधि के रूप में शिक्षण सामाजिक अध्ययन" सामाजिक शिक्षा

संक्षेप: यू.एस. में, शिक्षक उन छात्रों का सामना कर रहे हैं जो एक दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखने की प्रक्रिया में हैं। पिछले दो दशकों में, यह छात्र आबादी, जिसे अंग्रेजी भाषा के शिक्षार्थियों (ईएलएल) के रूप में जाना जाता है, दोगुने से अधिक है। सामाजिक अध्ययन सामग्री की भाषाई मांगों के कारण, ईएलएल को इस विषय क्षेत्र को समझने में विशेष कठिनाई हो सकती है। साथ ही, राज्य परीक्षणों पर

प्रवीणता प्रदर्शित करने के लिए, संघीय और राज्य सरकारें ईएलएल सहित सभी छात्रों के लिए बुला रही हैं। शिक्षकों को ईएलएल की मदद करने के तरीके खोजने की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उन्हें पूरी तरह से अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है, एक ऐसा भाषा जिसमें वे विशेषज्ञता के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ईएलएल के लिए सामाजिक अध्ययन सबसे कठिन विषय हो सकता है। गणित या विज्ञान जैसे विषयों के विपरीत, सामाजिक अध्ययन की अवधारणाओं को समझना काफी हद तक भाषा कौशल पर निर्भर करता है। इस लेख में, लेखकों ने रणनीतियों का वर्णन किया कि प्राथमिक शिक्षक सामाजिक अध्ययन सामग्री को ईएलएल को अधिक सुगम बनाने और उनके सीखने में सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में शामिल करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने तीन शब्दचित्र पेश किये है जिनमें ईएलएल सक्रिय रूप से भाषा कौशल की धारणा का मूल तत्व समझने और अर्जित करने में सक्रिय है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकला की, ईएलएल को उचित मंच उपलब्ध कराते हुए, शिक्षक कठिन पाठ्यक्रम को सुगम बना सकते है, उनके अंग्रजी भाषा कौशल को विकसित कर सकते है और, कक्षा में उनकी सक्रिय भागीदारी को बढ़ा सकते है ।(***Webiliography10)***

2.3 निष्कर्ष

शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले 15 शोध अध्ययनों की समीक्षा की है| इनमें 8 भारतीय एवं 7 विदेशी अध्ययन हैं| सम्बन्धित अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि भारत तथा विदेशों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित अध्ययनों की संख्या बहुत कम है| भारत में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दशा में शिक्षण योग्यता एवं अभिवृत्ति, सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को सीखने में मूर्त सामग्री और आडियो कैसेट, इतिहास शिक्षण और सीखने की समस्याए, इतिहास सीखने के प्रति अभिवृत्ति, सामाजिक विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकें आदि से सम्बन्धित अध्ययन हुए हैं| विदेशों पर हुए अध्ययन प्रोजेक्ट आधरित, निर्देशात्मक प्रद्योगिकी, शिक्षकों एवं प्रशासकों की अवधारणाओं का अन्वेषण, उपक्रम गतिविधि के रूप में शिक्षण आदि से सम्बन्धित अध्ययन हुए हैं| इतिहास के प्रति विद्यार्थियों में अरुचि एवं पाठ्यपुस्तकों में चित्रों तथा बोधगम्यता आदि को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने **"सामाजिक विज्ञान शिक्षण: वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियां एवं भावी संभावनाओं"** को वर्तमान में आवश्यक मानते हुए शोध अध्यन करना उचित समझा प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान सीखने में मदद करेगा|

अध्याय तृतीय

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अध्याय तृतीय

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.1 इतिहास

इतिहास शब्द का प्रयोग विशेषत: दो अर्थों में किया जाता है। एक है प्राचीन अथवा विगत काल की घटनाएँ और दूसरा उन घटनाओं के विषय में धारणा। इतिहास शब्द (इति + ह + आस; अस् धातु, लिट् लकार अन्य पुरुष तथा एक वचन) का तात्पर्य है "यह निश्चय था"। ग्रीस के लोग इतिहास के लिए "हिस्टरी" (history) शब्द का प्रयोग करते थे। "हिस्टरी" का शाब्दिक अर्थ "बुनना" था। अनुमान होता है कि ज्ञात घटनाओं को व्यवस्थित ढंग से बुनकर ऐसा चित्र उपस्थित करने की कोशिश की जाती थी जो सार्थक और सुसंबद्ध हो।

इस प्रकार इतिहास शब्द का अर्थ है - परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह (जैसे कि लोक कथाएँ), वीरगाथा (जैसे कि महाभारत) या ऐतिहासिक साक्ष्य। इतिहास के अंतर्गत हम जिस विषय का अध्ययन करते हैं उसमें अब तक घटित घटनाओं या उससे सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं का कालक्रमानुसार वर्णन होता है। दूसरे शब्दों में मानव की विशिष्ट घटनाओं का नाम ही इतिहास है। या फिर प्राचीनता से नवीनता की ओर आने वाली मानवजाति से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन इतिहास है। इन घटनाओं व ऐतिहासिक साक्ष्यों को तथ्य के आधार पर प्रमाणित किया जाता है। *(Webiliography14)*

3.1.1 इतिहास का उद्गम

इतिहास मानव के क्रमबद्ध विकास की कहानी है जिसमें काल के विभिन्न सोपान उसके विकास की विभिन्न स्थितियों को प्रदर्शित करते हैं| अंग्रेजी शब्द ‘History’ एक ग्रीक शब्द ‘Historia’ से निकला है जिसका अर्थ है - जानना या ज्ञात करना| इस शब्द का आरम्भ करने का श्रेय यूनानी

इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) को प्राप्त है| हेरोडोटस ने खोज की विधियों को अपनाकर अपने युग से पूर्व के फारस के युद्ध एवं समाज का वर्णन किया| हेरोडोटस ने जो कुछ भी लिखा है दिलचस्प कहानियों के रूप में है और वह इस क्षेत्र में बेजोड़ है| उसने इन वर्णनात्मक घटनाओं को इतिहास (History) का नाम दिया| वह पहला व्यक्ति था जिसने घटनाओं को कथा के रूप में लिखा और इसीलिए उसे कथात्मक इतिहास का जनक माना जाता है|

"What he wrote was story telling history and in this field he remains a master and model." **- Hevry Johnson,** *Teaching of History,* p.11.

'Historia' नामक यूनानी शब्द ही कालान्तर में लैटिन के शब्द 'Historia' में व्यवहृत होने लगा और तब तदुपरान्त अंग्रेजी में 'History' के नाम से प्रयुक्त होने लगा| Thucydides (454 ई. पू. से 399 ई. पू.) ने इतिहास को भिन्न रुप में प्रस्तुत किया उसने घटनाओं के शिक्षात्मक पहलू पर बल दिया उसने इतिहास के लेखन में उपयोगिता को प्राथमिकता दी वही पहला व्यक्ति था जिसने इतिहास में विश्वसनीयता लाने पर बल दिया और उसने ऐसे इतिहास को लिखने के लिए एक भिन्न पद्धति अपनायी, वह थी भूतकाल का इतिहास न लिखकर वर्तमान का इतिहास लिखना| हेरोडोटस ने दिलचस्प कहानियों के रूप में इतिहास को प्रस्तुत किया और Thucydides ने इतिहास को शिक्षात्मक रुप में प्रस्तुत किया| लगभग 2200 वर्ष तक इतिहास लेखन की यह परिपाटी चलती रही| इतिहास को कहानी तथा शिक्षात्मक विधि के प्रस्तुतीकरण से निकालकर वैज्ञानिक आधार पर सजाने एवं संवारने का श्रेय जर्मन लेखकों को प्राप्त है| इनमें रेंक(Ranke), निबूर (Niebhur) आदि जर्मन लेखक प्रसिद्ध हैं| रेंक ने अपनी पुस्तक की प्राक्कथन (1824) में स्पष्ट रुप से लिखा है कि "उसका उद्देश्य भूत का मूल्यांकन करना या शिक्षात्मक ढंग से सामग्री को या घटनाओं को प्रस्तुत करना नहीं है बल्कि वह प्रदर्शित करना है जो घटित हो चुका है|"

इस प्रकार 19वीं शताब्दी में इतिहास के क्षेत्र में एक नवीन परिवर्तन आय| इस युग में न केवल इतिहास के आयामों का ही विस्तार किया गया वरन् उसके सम्बन्ध की धारणाओं को स्पष्ट किया गया| इसी कारण 19वीं शताब्दी को 'इतिहास की शताब्दी' के नाम से जाना गया| इस शताब्दी के इतिहास में दो बातें नजर आती हैं- (अ) अतीत में कुछ बातें अतीत के लिए महत्वपूर्ण थे तथा (ब) उन अतीत की बातों का हमारे लिए क्या महत्व है? प्रथम बात रैंक के वैज्ञानिक अध्ययन का आधार रही जिसमें यह प्रयास किया गया कि अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं को अतीत के आधार पर देखा जाये| परन्तु 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में रैंक की इस वस्तुनिष्ठता को चुनौती दी गई और यह आग्रह किया जाने लगा कि अतीत के तथ्यों का संकलन आज की रुचियों एवं समस्याओं के आधार पर किया जाना अधिक उचित है| इस विचार को इतिहासकार फेरेरो (Ferrero) ने प्रतिपादित किया| इस प्रकार धीरे-धीरे इतिहास के विकास में उक्त व्यक्तियों यथा हीगल, स्पेंगलर आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया| ***(त्यागी, गुरुसरनदास पृष्ठ स.4)***

3.2 पाठ्य-पुस्तकों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

"The modern text-book is instructional asset that has a valuable place in today's classroom. The text-book may be used effectively in different ways" **- Thomas M. Risk**

रेमाण्ट का कथन है – "पिछले समय में छात्र अपने पाठ को याद करते थे और शिक्षक को सुनाते थे| आज शिक्षक पाठ को याद करता है और छात्रों को सुनाता है| इसका मुख्य कारण यह है की पाठ्य - पुस्तकों का स्थान मौखिक पाठ ने ले लिया है, परन्तु यह सर्वथा अनुचित है, क्योंकि शिक्षक के पथ प्रदर्शन के अभाव में सर्वोत्तम पाठ्य-पुस्तक भी छात्रों के लिए शिक्षा की अधूरी और अपूर्ण सामग्री रह

जाती है| अतः छात्रों को उचित प्रकार की शिक्षा देने के लिए शिक्षक तथा पाठ्य-पुस्तक दोनों की आवश्यकता है|"

क्रो व क्रो लिखा है, "न तो केवल पाठ्य-पुस्तक और न केवल अध्यापक, शिक्षा का सर्वोत्तम साधन है| यदि तरुण व्यक्तियों को अपने उत्तरदायित्व को वहन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना है, तो भली-भाँती चुनी हुई पाठ्य-पुस्तकों और भली-भाँती प्रशिक्षित अध्यापक के संयोग की आवश्यकता है|"

"Neither the text-book nor the teacher alone constitutes the best medium for education. A combination of well-chosen text-books and a well trained teacher is needed if young people are to be trained to meet their responsibility."
- **Crow** and **Crow**

लेखन-कला के उद्गम से पूर्व, शिक्षा व्याख्यान -प्रणाली से प्रदान की जाती थी| अध्यापक अपने मुख से बालकों के कानों तक ज्ञान पहुँचाता था| जब से लेखन- कला का उद्गम हुआ तब से पुस्तकों का रचना-कार्य प्रारम्भ हुआ| परन्तु पुस्तकों का सर्वाधिक प्रयोग मुद्रण-यन्त्र के आविष्कार के पश्चात हुआ **कॉमेनियस** पहला व्यक्ति था जिसने भाषा की पाठ्य-पुस्तक की रचना की| साथ ही उसने प्रत्येक स्तर पर पाठ्य-पुस्तकों के प्रयोग पर बल दिया|

3.3 इतिहास शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक का स्थान

परम्परागत इतिहास -शिक्षण पाठ्य-पुस्तकों का छात्रों द्वारा वाचन तथा शिक्षक द्वारा उसकी व्याख्या पर आधारित था, परन्तु पाठ्य-पुस्तकों का यह उपयोग अमनोवैज्ञानिक एवं रूढ़िवादी है| नवीन

दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित न होकर बाल –केन्द्रित हो गयी है | इतिहास -शिक्षण में अब पाठ्यपुस्तक को एकमात्र आधार न मानकर उसे एक प्रभावी शिक्षण-साधन के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है, परन्तु दुर्भाग्य से आज भी बहुत से इतिहास शिक्षक पाठ्य-पुस्तक का उपयोग परम्परागत ढंग से ही करते दिखाई पड़ते हैं जिससे इतिहास एक नीरस एवं रटने मात्र का विषय बनकर रह गया है |

इतिहास -शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक का स्थान अभी तक एक विवादपूर्ण प्रश्न है| इस सम्बन्ध में हमें दो विरोधी वर्गों के मत देखने को मिलते हैं, यथा -

(अ) पहले वर्ग के मतानुसार इतिहास -शिक्षण में पाठ्य -पुस्तकों को कोई स्थान प्रदान नहीं किया जाना चाहिए | वे अपने पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं-

- ❖ पाठ्य-पुस्तके शिक्षण-क्रम में उलझन उत्पन्न करती हैं|
- ❖ पाठ्य-पुस्तकें स्त्रोत-पद्धति की आत्मा का हनन करती हैं| स्त्रोत-पद्धति छात्रों को ऐतिहासिक अन्वेषण के लिए प्रोत्साहित करती है, परन्तु जब उनको पाठ्य-पुस्तकें प्रदान की जायेंगी तब वे स्त्रोतों का उपयोग नहीं करेंगे और इन्हीं पाठ्य-पुस्तकों की विषय-वस्तु से ही अपने को संतुष्ट एवं सीमित कर लेंगे|
- ❖ पाठ्य-पुस्तकें छात्रों में तथ्यों को रटने की बुरी आदत डालती हैं| साथ ही वह उनको अन्धानुकरण के लिए प्रेरित करती हैं|

(ब) दूसरे वर्ग के मतानुसार पाठ्य-पुस्तकें ही शिक्षा की आधार होनी चाहिए| वे अपने पक्ष में निम्नांकित तर्क प्रस्तुत करते हैं -

- ❖ पाठ्य-पुस्तकों का कक्षा में वाचन ऐतिहासिक तथ्यों को याद करने में सहायक होता है|

❖ पाठ्य-पुस्तकों के उपयोग से पाठ की पूर्व तैयारी एवं उसकी पुनरावृत्ति सरलता से की जा सकती है|

❖ पाठ्य-पुस्तके ज्ञान को मितव्ययी ढंग से प्रदान करने के लिए आवश्यक है|

❖ इनके उपयोग पर स्वाध्याय तथा आत्म-विश्वास की वृद्धि की जाती है|

❖ यह शिक्षण -विधि के संचालन तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षक का मार्गदर्शन करती हैं|

उपर्युक्त दोनों मतों पर दृष्टिपात करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि इन दोनों मतों के मध्य का मार्ग ग्रहण करना चाहिए| इसे एक प्रभावी शिक्षण साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिए| इसे अध्यापक का अनुपूरक माना जाए| डॉ. जॉनसन ने इसे एक महत्वपूर्ण शिक्षण-साधन माना है| किसी कक्षा के लिए बहुपाठ्य-पुस्तकों को निर्धारित किया जाना चाहिए जिससे शिक्षकों को पाठ्य-वस्तु एवं शिक्षण विधियों के चयन में सहायता मिल सके साथ ही छात्रों को स्वक्रिया एवं स्वाध्याय के सुअवसर प्राप्त हो सकें | परन्तु किसी भी स्थिति में पाठ्य-पुस्तक को अध्यापक का स्थान ग्रहण नहीं करने देना चाहिए, क्योंकि इतिहास शिक्षक एक सजीव व्यक्ति है, जबकि इतिहास की पाठ्य-पुस्तक एक जड़ पदार्थ मात्र है |

पाठ्य-पुस्तक के उपयोग के सम्बन्ध में **सी.पी. हिल** का मत है – "पाठ्य- पुस्तकें तथ्यों के संकलन के रूप में प्रयुक्त नहीं की जानी चाहिए, जिनको छात्र हृदयंगम कर सकें, वरन वे मौलिक सूचनाओं के भण्डार के रूप में प्रयुक्त की जायें जिनको छात्र विभन्न सक्रीय ढंगों से प्रयोग में ला सकें |"

3.4 पाठ्य-पुस्तकों के सुधार हेतु शिक्षा-आयोग के विचार

शिक्षा आयोग ने लिखा है – "एक ऐसी पाठ्य-पुस्तक जो एक सुशिक्षित एवं सुयोग्य विषय- विशेषज्ञों द्वारा लिखी गई हो और जिसके निर्माण में मुद्रण स्तर, चित्र एवं सामान्य सज्जा के प्रति समुचित सावधानी

बरती गई हो, छात्रों की रुचि को जगायेगी और अध्यापक के कार्य में पर्याप्त सहायक सिद्ध होगी|" इस प्रकार उच्च कोटि की पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था स्तर - उन्नयन करने में प्रभावी सिद्ध होगी | दुर्भाग्यवश हमारे देश में पाठ्य-लेखन तथा उत्पादन की ओर इसकी महत्ता के अनुरूप ध्यान नहीं दिया गया है अधिकांश विद्यालय विषयों में विशेषकर भाषाओं में ऐसी पुस्तकों की प्रचुरता है जिनका स्वरूप एवं स्तर निम्न कोटि का है तथा जिनका उत्पादन बड़ी उपेक्षा से किया गया है | इनके सुधार के लिए शिक्षा आयोग के निम्नांकित सुझाव उल्लेखनीय हैं –

1. देश में उपलब्ध विद्वानों की सहायता से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद(NCERT) द्वारा पाठ्य-पुस्तकों के उत्पादन के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाय |
2. भारत सरकार पाठ्य-पुस्तक उत्पादन के लिए सरकारी क्षेत्र में व्यापारिक ढंग पर कार्य करने वाले स्वायत्त संगठन की स्थापना करे |
3. पाठ्य-पुस्तकों के उत्पादन के लिए राज्य शिक्षा विभाग के निकट सम्पर्क में काम करने वाले एक पृथक अधिकरण (Agengy) की स्थापना की जाय | यह अभिकरण राज्य स्तर पर स्वायत्त एवं व्यापारिक आधार पर कार्य करे |
4. विद्वानों को पुस्तक लेखन के लिए आकर्षित करने हेतु यह अभिकरण पारिश्रमिक देने में प्रकाशकों से अधिक उदार नीति अपनाये |
5. यह अभिकरण पाठ्य-पुस्तकों का उत्पादन न लाभ, न हानि (No profit no Loss) के आधार पर करे |
6. पुस्तक लेखन के कार्य के लिए प्रत्येक सम्भव क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जाय |

3.4 इतिहास पाठ्य पुस्तकों की विशेषताएँ

इतिहास की पाठ्य -पुस्तक कैसी होनी चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर एक और प्रश्न के उत्तर पर निर्भर करता है यह है | पाठ्य पुस्तक का प्रयोग कौन करेगा –शिक्षक या छात्र ? पाठ्य-पुस्तक स्पष्टतः छात्रों के लिए होती है | उन्हें ही इसे कक्षा में तथा घर में पढ़ना है और इससे अधिकाधिक लाभ उठाना है तो स्वतः ही प्रश्न उठता है कि जब पाठ्य-पुस्तक छात्र के लिए है तो यह किस प्रकार की होनी चाहिए ? अर्थात इसमें कौन से गुण और विशेषताएँ होनी चाहिए? इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख आगे किया जा रहा है –

1. अच्छी पाठ्य-पुस्तक का एक आवश्यक गुण यह है कि वह शिक्षण के उद्देश्यों के आधार पर लिखी हुई हो | यह शिक्षा-उद्देश्यों, कक्षा तथा आयु-वर्ग के छात्रों के मानसिक विकास से सम्बन्धित होनी चाहिए |
2. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक की प्रमुख विशेषता है – **तथ्यों का शुद्ध प्रस्तुतीकरण** अतः पाठ्य-पुस्तक लेखक को अपने विषय का ज्ञान हो जिसके साथ ही उसे उस कक्षा को पढ़ाने का अनुभव हो जिसके लिए पाठ्य-पुस्तक लिख रहा है | इसलिए **जॉनसन**(Johnson) ने कहा है- *" शुद्धता की प्रथम कसौटी स्वयं लेखक है |"*
3. इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें **अत्यधिक तथ्यों का संक्षिप्त सार न हों** | दुर्भाग्य से हमारी अनेक पाठ्य-पुस्तक इस श्रेणी में आती हैं | ऐसा इसलिए होता है कि हमारे प्रकाशक लेखकों को भारतीय इतिहास को 200 या 250 पृष्ठों में लिखने के लिए बाध्य करते हैं | लेकिन इन पाँच हजार वर्षों में हुई प्रत्येक छोटी से छोटी घटना के प्रति आस्था रखता है | इस कारण वह सोचता है कि उसका बड़प्पन पाठ्य- पुस्तक के लेखक के रूप में गुणात्मक है और इस बात पर निर्भर करता है

कि उसकी पुस्तक में तथ्यों की संख्या कितनी है इसलिए वह सभी तथ्यों को दो- ढाई सौ पृष्ठों की 'कालकोठरी' में खचाखच भर देता है |
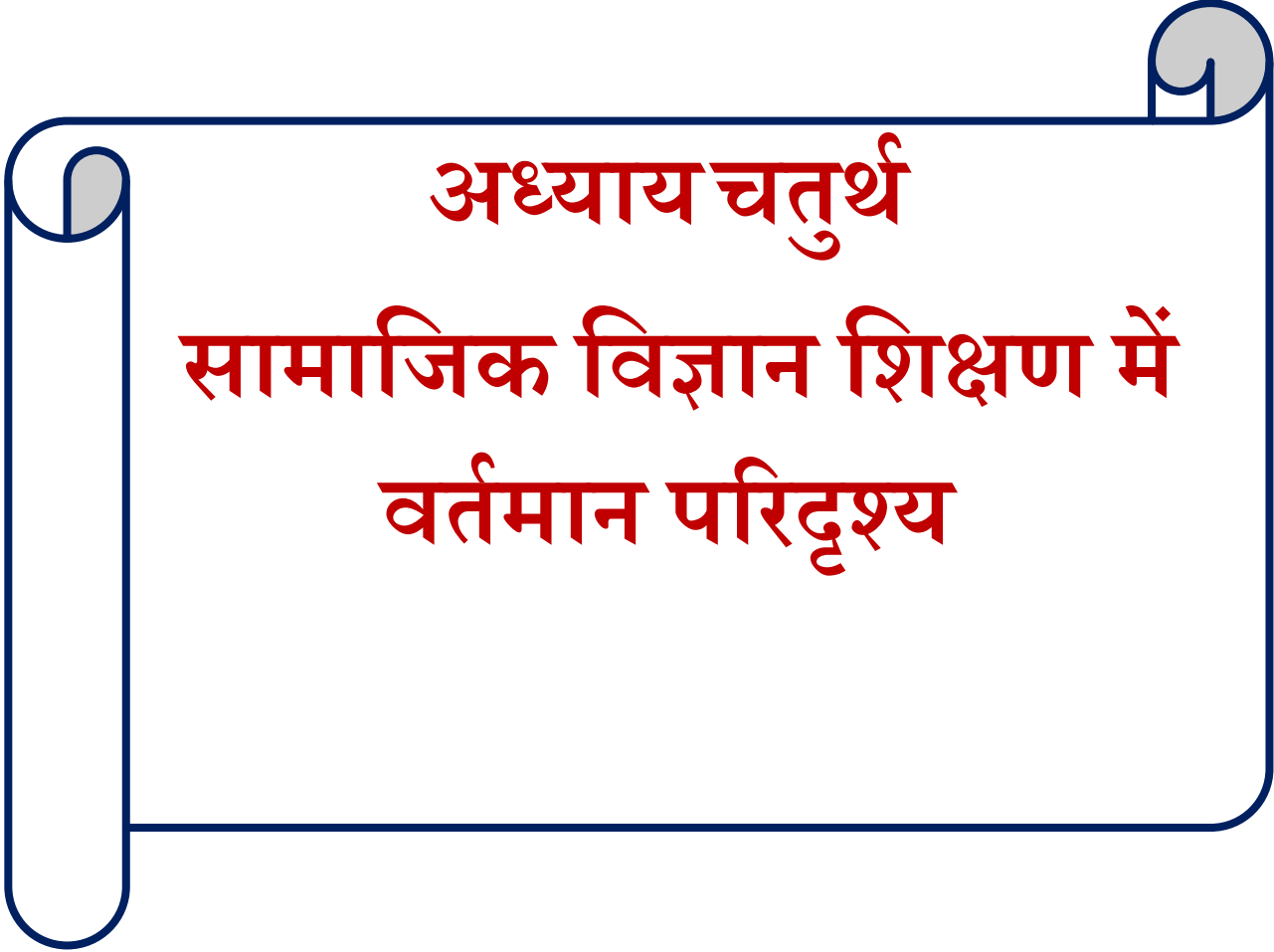
4. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक अनिवार्य रूप से **चयनात्मक** हो सभी घटनाओं तथा तथ्यों को वर्णन करना आवश्यक नहीं है | इनमें उन सभी तथ्यों तथा घटनाओं का पूर्ण विवरण होना चाहिए, जिन्होंने समाज के जीवन को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है |
5. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में आवश्यक तत्वों को **पूर्णता के सिद्धांत** के अनुसार निरूपित किया जाए | ये तथ्य स्पष्ट एवं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किए जायें जिससे इतिहास यथार्थ एवं सचिव प्रतीत हो सके |
6. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु तथा उसका प्रस्तुतीकरण देशकाल के अनुरूप अभिवृत्तियों को विकसित करे साथ ही विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण छात्रों की आवश्यकताओं तथा योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुकूल हो | विषय-वस्तु एवं उसके प्रस्तुतीकरण के माध्यम के छात्रों में लोकतांत्रिक भावना, धार्मिक सहिष्णुता, भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय सदभावना आदि अभिवृत्तियों का विकास किया जाना चाहिए | वे छात्रों में संकीर्ण विघटनकारी प्रवृतियों के विकास को अवरुद्ध करें |
7. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु **काल-क्रमानुसार** व्यवस्थित की जाय, क्योंकि समय-ज्ञान का विकास करना इतिहास शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य है | समय-ज्ञान से ही घटनाओं तथा व्यक्तियों में परस्पर कार्य-कारण सम्बन्ध स्पष्ट होता है |
8. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में **भाषा-शैली सरल** एवं **प्रभावोत्पादक** हो | इसमें भाषा-शैली न तो इतनी कठिन हो कि तथ्य समझ में ही ना आ सकें और न इतनी निम्नकोटि की हो कि उससे तथ्य प्रभावी न बन पायें | अतः कक्षा स्तर के अनुकूल सरल भाषा तथा साहित्यिक शैली में

तथ्यों का यथार्थ एवं प्रभावोत्पादक प्रस्तुतीकरण इतिहास की पाठ्य-पुस्तक की एक वांछनीय विशेषता है |

9. पाठ्य-पुस्तक निरूपण में **सरल** तथा **मूर्त** हो | जहाँ तक सम्भव हो इसमें सामान्यीकरण तथा अमूर्त धारणाएँ न हों | **प्रो. वी. डी. घाटे** ने लिखा है, **अध्याय का प्रारम्भ किसी सामान्यीकरण की ओर निर्देश करने के स्थान पर किसी सिद्धांत का स्पष्टीकरण करने वाले मूर्त उदाहरण से करना चाहिए |**
10. इतिहास की पाठ्य- पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है- **स्वक्रिया की उत्प्रेरक |** यह छात्रों को स्वक्रिया को प्रेरित करके उन्हें ज्ञानार्जन में सहायता दे | इसमें स्वाध्याय, संदर्भ ग्रंथों के अवलोकन, मानचित्र, समय-रेखा, मॉडल आदि बनाने तथा ऐतिहासिक पर्यटन, अभिनय आदि स्वक्रियाओं को क्रियांवित करने की प्रेरणा हेतु छात्रों के लिए निर्देश होने चाहिए |
11. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक रोचक हो इसमें | इसमें तथ्यों को रोचक बनाने के लिए मानचित्र, चित्र चार्ट, समय-रेखा, युद्ध योजना, स्त्रोत संदर्भ, चित्रकारी के नमूने आदि को आवश्यकतानुसार एवं कक्षा-स्तर के अनुकूल उपयुक्त स्थान प्रदान किया जाना चाहिए |
12. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक आकर्षक हो | पाठ्य-पुस्तक का मुद्रण, कागज, जिल्द, मुख्यपृष्ठ आदि शुद्ध एवं आकर्षक हों |
13. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक के अध्यायों के अन्त में अभ्यास प्रश्न हों |
14. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में मूल्यांकन के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरात्मक प्रश्न तथा निबंधात्मक प्रश्न हों |
15. अध्याय या अध्यायों के प्रत्येक वर्ग के अंत में अतिरिक्त समवायी अध्ययन(Collateral Reading) के लिए निर्देश हों |

16. पाठ्य-पुस्तक में अनुक्रमणिका, संदर्भ-ग्रंथ की सूची आदि हो जिसका प्रयोग करना छात्रों को सिखाया जा सके |

17. पाठ्य-पुस्तक का मूल्य यथोचित कम हो जिससे प्रत्येक बालक उसे प्राप्त कर सके |

अध्याय चतुर्थ

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में वर्तमान परिदृश्य

अध्याय चतुर्थ

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में वर्तमान परिदृश्य

4.1 इतिहास शिक्षण की आधुनिक अवधारणा

19वीं शताब्दी के अंतिम चरण तथा 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था, तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था | केवल इतिहासकार ही नहीं, वरन् राजनीतिशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इस 'विज्ञानों के विज्ञान'(Science of Sciences) का अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया था | फिर भी इतिहास की प्रकृति के विषय में विवाद बना रहा | कुछ विद्वानों ने इतिहास को 'कारण' (Cause) तथा 'कार्य-कारण भाव'(Causality) का सूचक माना | इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान या विज्ञानों के विज्ञान के रुप में देखा | आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है | अब समान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्ही विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है | जिसका अनुसरण भौतिक तथा सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं | इसी कारण आज इतिहास को उस-अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है | इस अध्ययन-क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है |

आज इतिहासकार इतिहास का निर्माण करने के लिए सर्वप्रथम तथ्यों (Facts) का संग्रह करता है | इसके उपरान्त वह उन तथ्यों का सत्यापन करता है | तथ्यों का सत्यापन उसके समक्ष एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर देता है | समस्या यह है कि अतीत के अवशेष उसके परिवर्तित तथा विकृत रूप में आते हैं | परन्तु आधुनिक युग ने ऐसे साधन उपलब्ध करा दिये हैं कि इनके परिवर्तित एवं विकृत रूप में होते हुए भी इतिहासकार वास्तविकता को खोजने में सफल हो जाता है | परन्तु जब वह अतीत के लिखित

अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि द्वारा इतिहास का निर्माण करता है तब उसे तथ्यों के सत्यापन में कठिनाई की अनुभूति करनी पड़ती है | उन अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि की विषय-वस्तु अविश्वसनीय हो सकती है | उस समय इतिहासकार को दूसरी लिखित सामग्री तथा अन्य प्रमाणों का प्रयोग करना पड़ता है | तभी वह वास्तविकता को प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकता है | परन्तु ऐसा करना सभी क्षेत्रों में सम्भव नहीं है क्योंकि उनसे सम्बन्धित दूसरी अन्य सामग्री एवं प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं |

जब इतिहासकार तथ्यों की विश्वसनीयता का निर्धारण कर लेता है तब उसके बाद वह तथ्यों को उनके महत्व के अनुसार वर्गीकृत करता है | उसके उपरान्त वह वर्गीकरण की शुद्धता का सत्यापन करता है | ऐसा करने में वह कल्पना तथा पूर्वधारणाओं का प्रयोग करता है | इनका प्रयोग करना उसके लिए अनिवार्य है | यहाँ इतिहासकार का काल्पनिक होने का अर्थ यह नहीं है कि वह तथ्यों का आविष्कार करें | परन्तु उसकी कल्पना उसके स्रोतों द्वारा प्रदान की जाने वाली सूचनाओं से बंधी रहती है | अतः वह घटनाओं का आविष्कार नहीं कर सकता | कल्पना तथा पूर्वधारणाओं के प्रयोग के कारण ही कहा है के कारण ही **गेटे (Goethe)** ने कहा है कि इतिहास समय-समय पर पुनः रचना की जानी चाहिए, क्योंकि प्रत्येक सन्तति नवीन रुचियों तथा वस्तुओं को नवीन ढंग से देखने तथा उनके प्रति नवीन दृष्टिकोण लेकर आगे बढ़ती है | ये नवीन दृष्टिकोण एवं रुचियाँ ही पूर्वधारणाएँ कहलाती हैं | अतः इन पूर्वधारणाओं से प्रभावित इतिहास को वास्तविकता पर पहुँचने के लिए समय- समय पर उसकी पुनः रचना करना अनिवार्य है | अन्त में इतिहासकार वर्गीकृत तथ्यों का विश्लेषण करके एक सामान्य सिद्धान्त का निर्धारण करता है |

अतः उक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक धारणा के अनुसार इतिहास समाज का एक सच्चा विज्ञान है जो मानव समाज की विवेचना वैज्ञानिक विधि से करता है |

4.2 इतिहास शिक्षण के आधुनिक आयाम

इतिहास शिक्षण के आधुनिक आयामों के अन्तर्गत इतिहास की ई-पाठ्य-पुस्तकें/फ्लिप बुक्स, यू-ट्यूब चैनल, इतिहास से सम्बन्धित ब्लाग, सोशल मीडिया: फेसबुक, तथा इतिहास की महत्वपूर्ण वेबसाइट आदि को सम्मलित किया गया है|

4.2.1. ई-पाठ्य-पुस्तकें

ई-पुस्तक (इलैक्ट्रॉनिक पुस्तक) का अर्थ है डिजिटल रूप में पुस्तक। ई-पुस्तकें कागज की बजाय डिजिटल संचिका के रूप में होती हैं जिन्हें कम्प्यूटर, मोबाइल एवं अन्य डिजिटल यंत्रों पर पढ़ा जा सकता है। इन्हें इण्टरनेट पर भी छापा, बाँटा या पढ़ा जा सकता है। ये पुस्तकें कई फाइल फॉर्मेट में होती हैं जिनमें पी०डी०ऍफ० (पोर्टेबल डॉक्यूमेण्ट फॉर्मेट), ऍक्सपीऍस आदि शामिल हैं, इनमें पी०डी०ऍफ० सर्वाधिक प्रचलित फॉर्मेट है। इण्टरनेट पर विभिन्न बोर्ड की सामाजिक विज्ञान की पुस्तकें उपलब्ध है | इण्टरनेट पर नि:शुल्क डाउनलोड हेतु बहुत सी सामाजिक विज्ञान की पुस्तकें उपलब्ध है जिनका विवरण निम्नलिखित है |
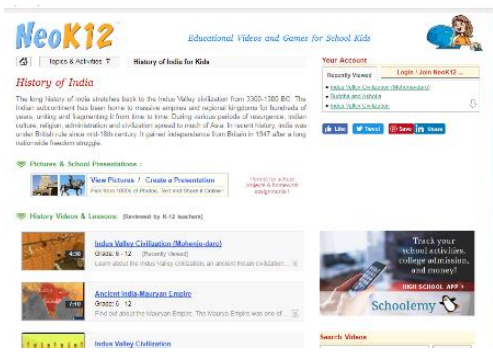
क्रमांक	**विवरण**	**वेबसाइट**

1.	NCERT की कक्षा 6 से 12 तक की सभी विषयों (इतिहास सहित) की हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तकें निःशुल्क डाउनलोड हेतु उपलब्ध हैं | Flipbook of Classes I-XII ePub Textbooks of Classes I-XII (PDF) e-Textbooks of States/UTs (ePub)	http://ncert.nic.in/ebooks.html
2.	टीचर्स आफ इण्डिया राष्ट्रीय ज्ञान आयोग तथा अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन का संयुक्त प्रयास है। यह पोर्टल शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और अन्य सब शिक्षाकर्मियों के बीच विचारों एवं शिक्षा से सम्बद्ध गतिविधियों के आदान-प्रदान का एक मंच है। इस पोर्टल से विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए सामाजिक विज्ञान की ई- पाठ्यपुस्तकें नि: शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं|	**(Webiliography2)**
3.	**एकलव्य प्रकाशन** यहाँ पर शिक्षकों के लिए मॉड्यूल, बच्चों के लिए साहित्य और गतिविधि की किताबें, पाठकों के लिए चित्रकथाएँ, युवा पाठकों के लिए सामग्री (कथा-व गैर-कथा-साहित्य) और तमाम सामाजिक	https://www.eklavya.in/books

	मुद्दों पर ई-पाठ्यपुस्तकें/ pdf/flip books उपलब्ध हैं।	
4.		
5.		

4.2.2. यू-ट्यूब

यू-ट्यूब एक साझा वेबसाइट (video sharing) है जहाँ उपयोगकर्ता वेबसाइट पर वीडियो देख सकता है| वीडियो अपलोड कर सकता है और वीडियो क्लिप (video clip) साझा कर सकता है| यू-ट्यूब फरवरी 2005 में तीन पूर्व PayPal कर्मचारियों द्वारा बनाया गया था | यू-ट्यूब **चाड हर्ले, स्टीव चेन** और **जावेद करीम** द्वारा स्थापित किया गया था|

क्रमांक	**विवरण**	**वेबसाइट**
1	यहाँ सामाजिक विज्ञान के विषयों पर कई वीडियो उपलब्ध हैं		http://www.neok12.com/History-of-India.htm
2	**अपूर्व जैन** यह अपूर्व जैन द्वारा संचालित गैर सरकारी चैनल है| यहाँ पर सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धि अनेक वीडियो उपलब्ध हैं|	http://YouTube.com/apoorve-jain **(Webiliography8)**

3	PADHO INDIA BADHO INDIA This is tha best social science channel. This Channel is especially created for teaching various subjects/topic asked in various competitive exams like SBI, RRB, IBPS, SSC, FCI Etc. You can ask any thing about examination pattern, syllabus, topic etc. Its a dedicated Channel for aspirants. Hope you will found it helpful. Best of luck for your upcoming Examinations	**(Webiliography9)**
4	SHREE CHANNEL This is a channel in which Ravi kumar yadav and his team will provide you full lecture series of SSC , BANK, RLY exam. Ravi kumar yadav holds M-tech Degree from NIT ALLAHABAD and B-Tech Degree from NIT AGARTALA . He worked as a senior software engineer for CISCO SYSTEMS. For the past many years, he has been training students for IIT JEE entrance exam and produced many toppers. He himself achieved Good RANK in IIT and GATE exam	**(Webiliography10)**
5	Published by: sangram singh Video Courtsey: Faculty: Govt Senior Secondary School Sector 45, Chandigarh. Videos In Collaboration with Bharat	**Webiliography11)**

	Prakarash Foundation. History Hindi Medium Chapter 1 Class 6th Part 1	
6	Published by: Raja manohar E-learning research on ancient Indian civilization produced at Hexolabs, SIIC, IIT Kanpur for a better insight, visit Kindly do not treat this video clipping as an exact archaeological reference. The idea is to make children aware/understand the whole Indus valley cultural system.	**(Webiliography12)**
7	Published by: Extramarks Education Extramarks is the leader in digital education for K-12 education. You can catch the action on other social platforms; click to get the action packed content.	(Webiliography13)
8	smartschoolonline History - Class 6 - Features of the Harappan Civilization SMART SCHOOL is next generation product in the ICT domain. With High Definition 3D videos coupled with eLearning softwares, the product is the next big thing in the eLearning Segment!	**(Webiliography14)**
9		

10		

4.2.3 सोशल मीडिया: फेसबुक

फेसबुक (Facebook) इंटरनेट पर स्थित एक निःशुल्क सामाजिक नेटवर्किंग सेवा है, जिसके माध्यम से इसके सदस्य अपने मित्रों, परिवार और परिचितों के साथ संपर्क रख सकते हैं। यह फेसबुक इंकॉ. नामक निजी कंपनी द्वारा संचालित है। इसके प्रयोक्ता नगर, विद्यालय, कार्यस्थल या क्षेत्र के अनुसार गठित किये हुए नेटवर्कों में शामिल हो सकते हैं और आपस में विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं|

क्रमांक	ग्रुप का नाम	विवरण	लिंक
1	Social Science Research Group	यह समूह सभी सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए है| जो अपने विश्वविद्यालय अनुसंधान परियोजना के लिए आंकड़े इकट्ठा करने की तलाश में हैं| जिनके पास धन की कमी है| मित्रों, स्वयंसेवकों और साथी शोधकर्ताओं की सहायता से डेटा एकत्र कर सकते हैं| इस समूह में 4700 सदस्य है|	(Webiliography15)
2	EPS (Economics, Politics	आईआईएम कोझीकोड, केरल का यह समूह अर्थशास्त्र, राजनीति और सामाजिक विषयों के क्षेत्रों में चर्चा के लिए एक मंच के रूप में कार्य	**(Webiliography16)**

	and Social Science)	करता है। इस समूह में 14057 सदस्य है|	
3	HISTORY MASTER	यह समूह इतिहास संबंधी विषयों का विश्लेषण करने के लिए है| आईएएस, यूपीएससी, एसएससी जैसे सभी भारतीय स्तर के प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं के लिए सहायक है । केवल इतिहास सम्बन्धित विषयों को यहां पोस्ट कर सकते है	**(Webiliography17)**
4	Social science study tricks	यह एक पब्लिक ग्रुप है| जो सामाजिक विज्ञान अध्ययन में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए है| विद्यार्थी इस समूह से जुड़कर सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी जिज्ञासाओं पर चर्चा कर सकते है| इस समूह को 584 से अधिक लोग पसंद कर चुके हैं|	**(Webiliography18)**
5	Social science Study and Informatio -ns	यह शोधार्थी द्वारा स्वयं बनाया हुआ फेसबुक पेज है| इस पेज से जुड़कर सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी बेहतर सीख सकते हैं| इस पेज को अब तक 950 से अधिक लोगों द्वारा पसन्द किया जा चुका है|	**(Webiliography19)**

4.2.4 ब्लॉग (Blog) :

ब्लॉग एक ऐसी जगह है जहाँ हर रोज कुछ न कुछ सीखने को मिलता है | ब्लॉग एक प्रकार के व्यक्तिगत वेबसाइट होते हैं जिन्हें डायरी की तरह लिखा जाता है| इनके विषय सामान्य भी हो सकते हैं और विशेष भी| हर ब्लॉग में कुछ लेख, कुछ फोटो, तथा वीडियो भी होते हैं| हिंदी भाषा के अनुसार ब्लॉग को चिट्ठा कहा जाता है|

Blog एक अंग्रेजी शब्द है जो कि Weblog शब्द का एक सूक्ष्म रूप है | Weblog नाम 1997 में Jorn Berger ने दिया, जिसे आगे चलकर 1999 में Merholz ने इसका short नाम रखा Blogs |

आज के आधुनिक युग में लोग इन्टरनेट पर लिखना यानि ब्लॉग लिखना पसंद करते हैं, उसे share करते हैं| इसी को ब्लॉग कहा जाता है| ब्लॉग किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है| ब्लॉग लिखने वाले को ब्लॉगर कहा जाता है | भारत में कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान से जुड़े ब्लॉग निम्नलिखित हैं-

क्रमांक	विवरण	लिंक
1	इस ब्लाग के संस्थापक और निर्देशक Pramesh P Jain वह पेशे से एक सिविल इंजीनियर हैं| यह ब्लाग सभी विद्यार्थियों को जो, नौकरी के लिए संघर्ष कर रहे हैं उनकी मदद करता है	इस ब्लॉग में सामाजिक विज्ञान से जुडी अध्ययन सामग्री निःशुल्क	**(Webiliography20)** Pramesh Jain Blog Civil Service Preparation Home Free E-books Topper's Notes Coaching Notes For UPSC Prelims Mains My Blog Notes Store Language Home » About Us

	प्रदान की जाती है | प्रमेश जैन अपने ब्लाग के माध्यम से और 8 सदस्यों की टीम ख़ुशी से अपने उद्देश्य को पूरा करने का कम कर रहे हैं|	
2		

अध्याय पंचम

सामाजिक विज्ञान की पाठ्य- पुस्तकों का मूल्यांकन एवं समावेशन

5.0 सामाजिक विज्ञान की पाठ्य- पुस्तकों के मूल्यांकन के मापदण्ड

पाठ्य-पुस्तकों का वस्तुपरक मूल्यांकन करने तथा उनका समुचित चयन करने के लिए आर्थर बाइनिंग तथा डेविड बाइनिंग (Arther Bining and Davied Bining) द्वारा निर्धारित मापदण्ड को कुछ परिवर्तनों के साथ इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है | पाठ्य पुस्तकों की निम्न विशेषताओं का उनके समक्ष अंकित पक्षों के आधार पर मूल्यांकन किया जा सकता है |

"On the lines of a suggested scale for Evaluating Text-Book in the Social Studies" – **A. C. Bining and D. C. Bining**: *Teaching the Social Studies in Secondary School,* pp.80-81.

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक विज्ञान की इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए कुछ मापदण्ड अपनाए गए हैं जो इस प्रकार हैं –

1. पाठ्य- वस्तु की व्यवस्था
    - पाठों का संगठन
    - पाठों का तर्कसंगत विभाजन
    - पाठों की सुसम्बद्धता
    - सारांश
    - अन्तर्निहित एकता

2. प्रस्तुतीकरण

- भाषा
- विस्तार
- शैली
- ऐतिहासिक शब्दावली
- आधुनिकतम ज्ञान का समावेश

3. चित्र, स्रोत, सन्दर्भ, मानचित्र, चार्ट,

- संख्या
- आकार
- शुद्धता
- उपयुक्ता
- विस्तार
- रंग

4. उदाहरण

- वस्तुनिष्ठता
- गुणात्मकता
- उपयुक्तता
- स्पष्टता
- जीवन से सम्बद्धता

5. मूल्यांकन प्रश्न

- ➢ पाठ्य-वस्तु आधारित उपयुक्तता
- ➢ छात्रों की दृष्टि से प्रश्नों की उपयोगिता
- ➢ प्रश्नों में प्रेरणात्मक शक्ति

6. साज-सज्जा

- ➢ पुस्तक का आकार
- ➢ जिल्द की सुदृढ़ता
- ➢ कागज
- ➢ छपाई

5.1 उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड की इतिहास पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन करना|

5.1.1 उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद की इतिहास पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद की कक्षा 6 इतिहास की पाठ्य-पुस्तक का अध्ययन किया गया जिसमें कुछ कमियां पाई गई हैं जो निम्नलिखित है--

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रमाणित इतिहास की पाठ्यपुस्तक ***हमारा इतिहास और नागरिक जीवन*** के पाठ -1 *कैसे पता करें क्या हुआ था और क्या नहीं,* पृष्ठ संख्या 7 में उल्लेख है कि जब मानव ने लिखना शुरू किया उसे कागज का ज्ञान नहीं था| वह लेखों को *ताड़पतत्रों, भोजपत्रों* और *ताम्रपत्रों* पर लिखता था | किंतु **पाठ्यपुस्तक में ना तो ताड़पत्रों, भोजपत्रों एवं ताम्रपत्रों के कोई चित्र दिए गए हैं और ना ही इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि इन पर किस प्रकार से लिखा जाता था |**

इसी प्रकार पाठ -2 *पृथ्वी पर मानव,* पृष्ठ संख्या 13 में *आखेटक* शब्द दिया गया है किंतु **आखेटक शब्द को कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है| आखेटक का क्या अर्थ होता है| छात्र शब्द को रट तो लेंगे किन्तु शब्द का सही अर्थ नहीं समझ पायेंगे**| इसी पाठ पर पृष्ठ संख्या 14 पर पुरापाषाण काल के बारे में यह भी जानिए- के अन्तर्गत बताया गया कि उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में कुछ गुफाएं मिली है जिनसे यह पता चलता है कि यहाँ मानव समूह में रहता था| किन्तु **पाठ्यपुस्तक में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले का मानचित्र नहीं लगाया गया जिससे छात्र मिर्जापुर की अवस्थिति के बारे में नहीं समझ पाएंगे**| अतः आवश्यकता इस बात की है कि जहाँ भी आवश्यक हो तो मानचित्र का प्रयोग किया जाए|

पाठ-2 पृष्ठ संख्या 16 में नवपाषाण काल के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि अब यह मिट्टी के बर्तन बनाना भी जान गए थे| पहिए का आविष्कार भी हुआ| इसका प्रयोग मिट्टी से बर्तन बनाने तथा सामान ढोने में किया जाने लगा है| बर्तनों पर नक्काशी एवं चित्रकारी में रंगों का प्रयोग होने लगा| खेती के कारण लोग एक ही जगह रहने लगे| फलस्वरुप नये-नये कौशलों का विकास हुआ जैसे- *मूँज की टोकरी व चाटाइयाँ बनाना, कताई करना, जानवरों के बालों से कपड़ा बनाना* आदि | किंतु **पाठ में न तो इनके कोई भी चित्र दिए गए हैं न ही यह कैसे बनती थी इस बारे में स्पष्ट उल्लेख है**| यहाँ पर यह केवल मात्र रटने तक ही सीमित है|

इसी प्रकार पृष्ठ संख्या 16 में ही शवों (मृत व्यक्तियों) के दफ़नाने के ढंग बे बारे में बताया जा रहा है किन्तु **उससे सम्बन्धित कोई भी चित्र नहीं दिखाया गया| न ही इस पाठ पर महत्वपूर्ण शब्दावली के रूप में किसी शब्द को अलग से परिभाषित किया गया**| पाठ -3 *नदी घाटी सभ्यताएँ,* पृष्ठ संख्या 20 में मोहनजोदड़ों के स्नानागार का चित्र प्रदर्शित किया गया है **किन्तु इस बात का कहीं भी उल्लेख नही है कि स्नानागार कितना बड़ा था उसकी लम्बाई, चौड़ाई कितनी थी** | इसी पाठ पर खुदाई में ताँबे और काँसे की बनी हुई कुल्हाड़ी, दर्पण, आरी, कंधिया, उस्तरा प्राप्त होने हा

जिक्र किया गया हैं किन्त **इनके कोई चित्र नहीं है| न ही इनके उपयोग का पर कोई चर्चा की गयी है|** पाठ-4 *वैदिक काल* में 'चारे और पानी' की खोज नामक शिक्षण बिन्दु पर सिन्धु, सतलज, व्यास और सरस्वती निदियों का उल्लेख है| पाठ में मानचित्र का प्रयोग तो किया गया किन्तु **इन नदियों को मानचित्र में नहीं दर्शाया गया| न ही यह बताया गया की ये नदियाँ वर्तमान में किन राज्यों में हैं|** पृष्ठ संख्या 32 में यज्ञ और वादों के बारे में बताते हुए कहा गया कि आर्य लोग प्रारम्भ में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपाठ करते थे| बाद में यज्ञ करने लगे | यज्ञ का कार्य पुरोहित करवाता था| किन्तु **स्तुतिपाठ और पुरोहित शब्द का क्या अर्थ होता है यह नहीं बताया गया न इन शब्दों को शब्दावली के रूप में जोड़ा गया|**

पृष्ठ संख्या 32 पर ही *ऋग्वेद* के बारे में जानकारी दी गयी है परन्तु **ऋग्वेद के विषय में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं दी गयी न ही ऋग्वेद के किसी एक पांडुलिपि का एक पन्ना चित्र के रूप में दिखाया गया** | पाठ-5 *महाजनपद की ओर* पृष्ठ संख्या 36 में कहा गया की 600 ई०पू० में 16 महाजनपद थे| इन महाजनपदों में से चौदह में राजतन्त्र तथा दो गणतंत्र था| किन्तु **16 महाजनपदों में से सिर्फ 4 महाजनपदों का उल्लेख है शेष महाजनपदों का उल्लेख नहीं| और यह भी स्पष्ट नहीं कि जिन दो महाजनपदों में गणतंत्र था वो कौन से महाजनपद थे|**

5.1.2. एनसीईआरटी की इतिहास पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध में एनसीईआरटी की कक्षा 6 की इतिहास पाठ्यपुस्तक हमारे अतीत-I का अध्ययन किया गया जिसमें कुछ कमियां पाई गई जो निम्नलिखित है-

एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित इतिहास पाठ्यपुस्तक हमारे अतीत-I के अध्याय 4 *आरंभिक नगर* पृष्ठ संख्या 32 में हड़प्पा की कहानी बताते हुए हड़प्पा पुरास्थल के सम्बन्धित खंडहरों पर चर्चा की गई है| **किंतु पाठ्यपुस्तक में हड़प्पा के खंडहर से सम्बन्धित कोई चित्र नहीं दिया गया**| इसी प्रकार हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 33 में मानचित्र : 3 में उपमहाद्वीप के आरंभिक नगर को दर्शाया गया है परंतु **मानचित्र स्पष्ट रुप से समझ में नहीं आ रहा है तथा रंगीन नहीं है|** इसी प्रकार हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 33 पर ही नगरों की विशेषता क्या थी पर चर्चा करते हुए लिखा है कि ‘‘नगरों को दो या उससे ज्यादा हिस्सों में विभाजित किया गया था| प्रायः पश्चिमी भाग छोटा था लेकिन ऊंचाई पर बना था| पूर्वी हिस्सा बड़ा था लेकिन निचले हिस्से में था| ऊंचाई वाले भाग को *नगर -दुर्ग* कहा गया और निचले हिस्से को *निचला-नगर* कहा गया| **किंतु पाठ्यपुस्तक में *नगर-दुर्ग* एवं *निचला-नगर* से सम्बन्धित कोई भी चित्र नहीं दर्शाया गया**| इसी प्रकार हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 34 पर मोहनजोदड़ो के तालाब का चित्र प्रदर्शित किया गया| **किंतु यह नहीं बताया गया कि तालाब कितना बड़ा था उसकी लंबाई और चौड़ाई कितनी थी**| पृष्ठ संख्या 34 पर ही लिखा है कि नगरों के घर आमतौर पर एक या दो मंजिल के होते थे घर के आंगन के चारों ओर कमरे बनाए जाते थे| **परंतु अध्याय में घरों से सम्बन्धित कोई चित्र नहीं प्रदर्शित किया गया|** हमारे अतीत-I पृष्ठ संख्या 36 पर नगर और नये शिल्प से सम्बन्धित सबसे उपर पत्थर के बाट, मध्य में बाएँ मनके, तथा मध्य में दाएं पत्थर के धारदार फलक, तक नीचे दाएं कढ़ाईदार वस्त्र से सम्बन्धित कुछ चित्र दिए गए हैं|

किंतु चित्र अत्यधिक आकर्षक नहीं है| अतः प्रकरण से संबंधित आकर्षक रंगीन चित्रों का प्रयोग किया जाना वांछनीय है| हमारे अतीत-I *पृष्ठ संख्या 37 फ़ेयन्स* से सम्बन्धित चित्र दिया गया है| जो स्पष्ट एवं अनाकर्षक है| पृष्ट संख्या 38 में लिखा है हड़प्पा के लोग तांबे का आयात सम्भवतः आज की राजस्थान से करते थे| यहाँ तक कि पश्चिम एशियाई देश ओमान से भी तांबे का आयात किया जाता था| कांसा बनाने के लिए तांबे के साथ मिलाए जाने वाली धातु का आयात आधुनिक ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था |**परंतु उन देशो से सम्बन्धित कोई मानचित्र नहीं प्रदर्शित किया गया|**

5.2 इतिहास की पाठ्य- पुस्तकों का आलोचनात्मक विश्लेषण

पाश्चात्य देशों में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों के सुधार एवं उनके अच्छे निर्माण कार्य से सम्बन्धित बहुत से अनुसंधान कार्य हुए हैं और हो रहे हैं| इन अनुसंधान कार्यों के फलस्वरूप वहाँ उत्तम पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हो सकी हैं, परन्तु हमारे देश में अभी भी पाठ्य-पुस्तकों का रूप परम्परागत बना हुआ है| यद्यपि इस क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T.) ने कुछ कार्य किया है जसकी प्रशंसा की जा सकती है| फिर भी अधिकांश पाठ्य-पुस्तकें आलोचना का विषय बनी हुई हैं|

प्रस्तुत लघु शोध में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया जिनमें निम्नलिखित दोष पाये गए-

- ❖प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में पाठों का संगठन सही नही किया गया| कई प्रकरण बहुत बड़े हैं| जिन्हें छोटा करने की आवश्यकता है|
- ❖पाठ्य-पुस्तकों में भारत सरकार द्वारा मान्य शब्दावली का प्रयोग तो हुआ है किंतु कहीं कहीं यह देखा गया की शब्द बहुत क्लिष्ट है|

❖ प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में उपयुक्त सहायक सामग्री चित्र, मानचित्र, रेखा-चित्र आदि का अभाव पाया गया है|

❖उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में चित्र बहुत छोटे तथा अस्पष्ट हैं|
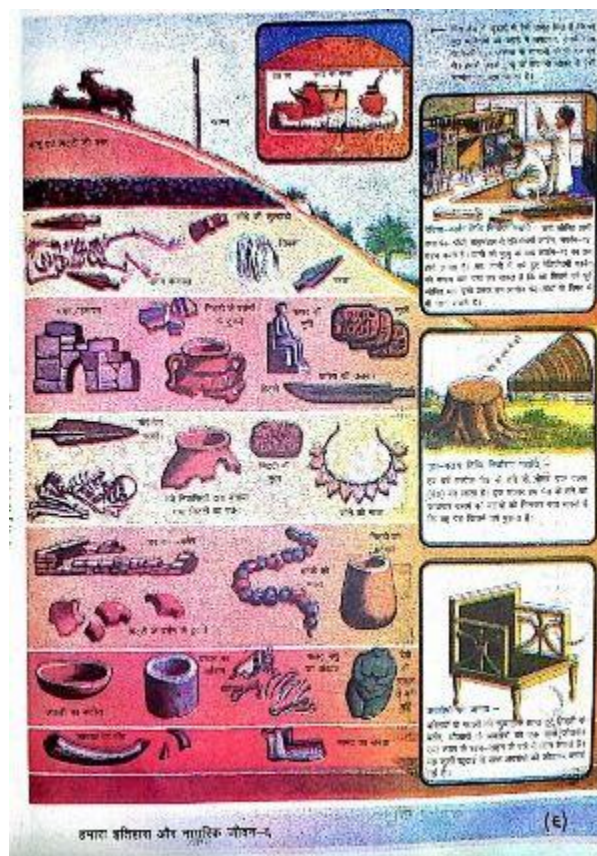
❖प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में स्रोत/संदर्भों का आभाव पाया गया | इस कारण इनका स्तर भी गिरा हुआ पाया गया|

❖बाह्य साज-सज्जा के दृष्टिकोण से प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें निम्न श्रेणी की हैं|

❖प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में भाषा-शैली का भी एक दोष पाया गया| भाषा-शैली का प्रयोग छात्रों के मानसिक स्तर, आयु तथा शब्द भण्डार के अनुसार नही

❖उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में बहुत घनीभूत (Congested) सामग्री है|

❖उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में फॉन्ट बहुत छोटा है तथा पंक्तियों के मध्य उचित अन्तराल नहीं है|

इतिहास के स्रोत–
पुरातात्विक स्रोत

ऊपर दिये चित्र में बताए गये स्रोतों की सूची बनाओ

(८)

हमारा इतिहास और नागरिक जीवन

2015-16
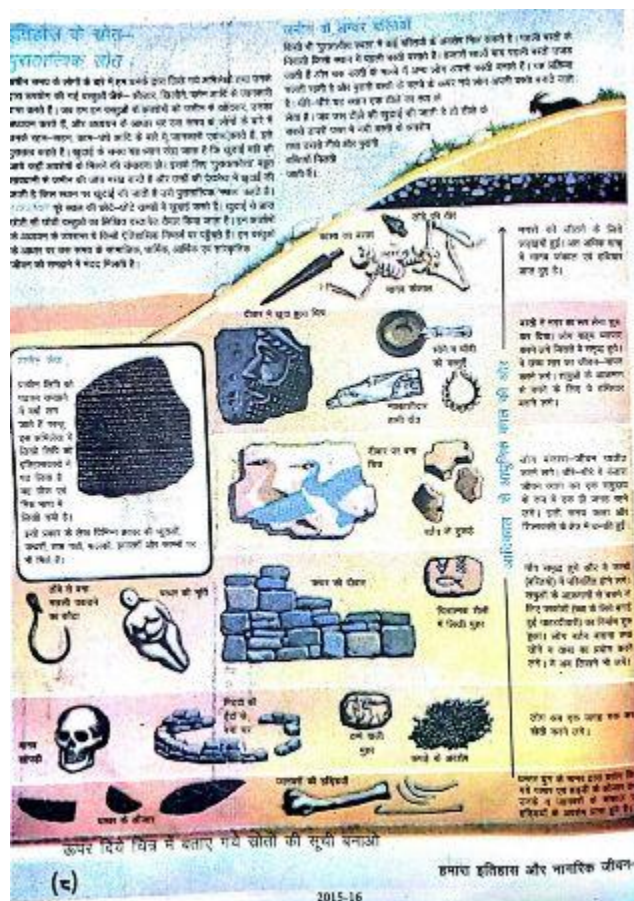
❖उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में कागज तथा स्याही की गुणवत्ता उचित नहीं पायी गयी|

❖पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण छात्रों के मानसिक एवं संवेगात्मक स्तर के अनुकूल नहीं है| वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण निबंधात्मक ढंग से किया गया|

❖ पाठ्य-पुस्तकों में पाठों के अन्त में अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री नहीं दी गयी|

❖ पाठ्य-पुस्तकों में आधुनिक अन्वेषण एवं नवीन घटनाओं का समावेश नहीं है|

5.5 पाठ्यक्रम में समावेशन हेतु सुझाव

इतिहास के शिक्षण-उद्देश्यों की पूर्ति में पाठ्यक्रम एवं विषय-वस्तु को महत्वपूर्ण साधन माना जाता है| बालक तथा बालिकाओं में अपेक्षित व्यवहार- परिवर्तनों के लिए सीखने के अनुभवों का विशेष महत्व है| विद्यालय जीवन में विभिन्न विषयों की पाठ्यवस्तु, पाठ्य-पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम होते हैं| शिक्षण-विधियों और प्रविधियों द्वारा शिक्षार्थियों को सीखने के– अनुभव प्रस्तुत किए जाते हैं| जिससे उनके विचारने की शक्ति, क्रिया-विधि, अभिरुचि, अभिवृत्ति और कार्य-शैली में किसी अभीष्ट दिशा में परिवर्तन लाया जाता है| जिससे किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति की जाती है| इस प्रकार सीखने के अनुभवों के मुख्य साधन पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, पाठ्य-पुस्तकें आदि हैं| अतः यह आवश्यक है शिक्षकों को इन सभी का सही ज्ञान हो| इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों में दूरदर्शिता का विकास कर सकें और भूतकाल व वर्तमान के आधार पर भविष्य के बारे में सही अनुमान कर सकें|

इतिहास के प्रचलित पाठ्यक्रम में अनेक दोष पाये गए हैं| जिनमें सुधार करना अत्यन्त आवश्यक है| इतिहास के पाठ्यक्रम में समावेशन हेतु सुझाव इस प्रकार हैं –

❖ वर्तमान इतिहास के पाठ्यक्रम में घटनाओं, राजाओं के युद्धों, जय-पराजय को अधिक महत्व दिया गया है| अतः आश्यकता है की इतिहास के पाठ्यक्रम में सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं एवं प्रगति को विशेष महत्व दिया जाए|

❖ पाठ्य-पुस्तकों में चित्र, मानचित्र, रेखा-चित्र, ऐतिहासिक पर्यटनों आदि के चित्र बहुत कम एवं अस्पष्ट हैं | अतः प्रकरणों से सम्बन्धित स्पष्ट एवं रंगीन चित्र यथास्थान वाछनीय हैं|

❖ पाठ्य-पुस्तकों में किसी भी ऐतिहासिक स्थल के भ्रमण पर कोई चर्चा नहीं की गई है| अतः प्रकरणों से सम्बन्धित भ्रमण हेतु सुझाव पाठ के अन्त में दिये जाने चाहिए |

❖ विषय का ज्ञान केवल पुस्तक तथा कक्षा से प्राप्त करने तक ही सीमित न रहना चाहिए वरन पाठ्यक्रम में विद्यालय में होने वाली समस्त शैक्षणिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाए | अन्य शैक्षणिक क्रियाओं/पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को सम्मलित किये जाने की अपार सम्भावनाएँ हैं यथा इतिहास शिक्षण में कठपुतली, मुखौटे, भूमिका निर्वाह (Roll play), नाटक, फैन्सी ड्रेस शो,

❖ इतिहास के पाठ्यक्रम को लचीला होना चाहिए उसे निरंतर संशोधित, परिमार्जित एवं अद्यतन किया जाना चाहिए|

❖ क्षेत्र/ प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/ शौर्य/ वीरता/ पराक्रम/ संस्कृति/ पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से शामिल किए जाने की आवश्यकता है| अन्य क्षेत्रों में सम्बन्धित विवरण संक्षेप में भी दिया जा सकता है| जैसे-बुंदेलखंड में झांसी की रानी, आल्हा-उदल का इतिहास आदि

अध्याय षष्ट

निष्कर्ष, उपादेयता एवं सुझाव

6.1.0 प्रस्तावना

अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसंधान का अन्तिम चरण माना गया है| अनुसंधान क्षेत्र में निष्कर्षों व सामान्य प्रदत्त को एक सार्वभौमिक आकार प्रदान करता है इसके द्वारा अनुसंधानकर्ता को निष्कर्षों के महत्व को मूल्यांकित कर सकने की योग्यता प्राप्त होती है|

किसी भी शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्णत: विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यह शोध पूर्णत: शोध क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि प्राय: कुछ पहलू अछूते रह जाते हैं| इसलिए परिणाम के साथ-साथ यह भी नितान्त आवश्यक है कि शोध अध्ययन के सन्दर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जाये, जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है| अतः प्रस्तुत अध्याय को उपर्युक्त वर्णित बिंदुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है-

- ❖शोध अध्यन के निष्कर्ष
- ❖शोध अध्यन की शैक्षिक उपादेयता
- ❖अध्ययन के सुझाव
- ❖भावी अध्यन हेतु सुझाव

6.1.1 शोध अध्यन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है| प्रस्तुत शोध कार्य में 8 उद्देश्य लिए गए थे| जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है| लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गए-

उद्देश्य 1: इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में आरेखीय एवं दृश्य सामग्री का अध्ययन करना|

शोधार्थी द्वारा U.P. BOARD और CBSE BOARD की जूनियर हाईस्कूल की प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों का अध्ययन किया गया| अध्ययन में पाया गया की पाठ्यपुस्तकों में उपयुक्त सहायक सामग्री चित्र, मानचित्र, रेखा-चित्र आदि का अभाव है| पाठ्य-पुस्तकों में प्रकरण से सम्बन्धित चित्र बहुत छोटे तथा अस्पष्ट हैं|

उद्देश्य 2: इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करना |

उक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड द्वारा प्रमाणित एवं NCERT द्वारा प्रकाशित इतिहास की कक्षा 6-8 की पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया जिनमें पाया गया कि उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद की पाठ्य-पुस्तकों में-

- ❖ बहुत घनीभूत (Congested) सामग्री है|
- ❖ पाठ्य-पुस्तकों में फॉन्ट बहुत छोटा है|
- ❖ पंक्तियों के मध्य उचित अन्तराल नहीं है|
- ❖ पाठ्य-पुस्तकों में स्रोत/सन्दर्भों का आभाव है|

जबकि NCERT द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों में उपयुक्त कमियां नहीं पायी गयी हैं|

उद्देश्य 3: इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु की बोधगम्यता का अध्ययन करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में यह पाया गया पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण छात्रों के मानसिक एवं संवेगात्मक स्तर के अनुकूल नहीं है| वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण निबंधात्मक ढंग से किया गया है| प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में भाषा-शैली का भी एक दोष पाया गया| भाषा-शैली का प्रयोग छात्रों के मानसिक स्तर, आयु तथा शब्द भण्डार के अनुसार नहीं किया गया है|

उद्देश्य 4: उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड की इतिहास पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन करना |

पाठ्य-पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन के बाद निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है| बाह्य साज-सज्जा के दृष्टिकोण से प्रचलित इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें निम्न श्रेणी की हैं| उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रचलित इतिहास पाठ्य-पुस्तकों में कागज तथा स्याही की गुणवत्ता उचित नहीं पायी गयी| जबकि एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित कई चित्र अस्पष्ट हैं|

उद्देश्य 5 : इतिहास शिक्षण से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में इतिहास शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए नवीनतम सामग्री **ई-पाठ्यपुस्तकें, यू-ट्यूब चैनल, ब्लाग, सोशल मीडिया** तथा इतिहास शिक्षण से सम्बन्धित **वेबसाइट** के प्रयोग के लिए सुझाव प्रस्तुत किये गए|

उद्देश्य 6: इतिहास शिक्षण के किसी एक प्रकरण का सुझावात्मक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करना |

शोधार्थी ने NCERT द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 की इतिहास पाठ्य-पुस्तक '**हमारे अतीत**' के अध्याय 4 '***आरंभिक नगर***' शीर्षक का सुझावात्मक आदर्श मॉडल प्रस्तुत किया|

उद्देश्य 7: इतिहास पाठ्यक्रम को रुचिकर बनाने हेतु सुझाव देना|

शोधार्थी द्वारा अध्ययन में पाया गया कि इतिहास का पाठ्यक्रम रुचिकर नहीं है| शोधार्थी द्वारा इतिहास के पाठ्यक्रम को रुचिकर बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये यथा-

- ❖ पाठ्य-पुस्तकों में संशोधन
- ❖ रंगीन चित्रों का समावेशन
- ❖ वेबलिंकों का समावेशन

उद्देश्य 8 इतिहास पाठ्यक्रम को अद्यतन (Update) करने हेतु सुझाव|

शोधार्थी द्वारा अध्ययन में पाया गया की इतिहास का पाठ्यक्रम अद्यतन (Update) नही है| प्रचलित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों को अद्यतन (Update) करने की अत्यन्त आवश्यकता है|

6.2 शोध अध्यन की शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, नीति विशेषज्ञों, नीति निर्देशकों एवं निर्धारकों, एवं परामर्शदाताओं के दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायक होंगे | सामाजिक विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते है |

6.2.1 विद्यार्थी वर्ग हेतु उपयोगिता

प्रस्तुत लघु शोध में सी.बी.एस.ई की कक्षा 6 की इतिहास पाठ्य पुस्तक के लिए एक सुझावात्मक आदर्श मॉडल प्रस्तुत किया गया जो छात्रों को इतिहास पढ़ने में तथा इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक होगा | आदर्श मॉडल में नवीन चित्रों एवं आकर्षक रंगों का प्रयोग किया गया है | प्रकरण को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न वीडियो का प्रयोग किया गया है | वीडिओं के माध्यम से छात्र

इतिहास की गहन जानकारी प्राप्त करने में सहायक होंगे | तथा सीखे हुए ज्ञान को अधिक समय तक स्थायी रखने में सहायक होंगे |

6.2.2 अध्यापक वर्ग हेतु उपयोगिता

प्रस्तुत शोध के परिणामों के द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण विधियों में परिमार्जन कर कक्षा-कक्ष शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाकर अपने शिक्षण में सुधार कर सकते हैं | सामाजिक विज्ञान शिक्षण के आधुनिक आयाम जैसे YouTube, ई-पाठ्यपुस्तकों, ब्लाग तथा ई-लर्निंग के माध्यम से सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं | इस प्रकार सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों के लिए यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा |

6.2.3 पाठ्यक्रम निर्माताओं हेतु उपयोगिता

प्रस्तुत लघु शोध में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड की इतिहास पाठ्य पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन कर पाठ्य पुस्तकों की कमियों पर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया| पाठ्यक्रम निर्माता इन कमियों को दूर कर पाठ्यक्रम में सुधार कर सकते हैं | इस प्रकार सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा |

इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक, शिक्षाशास्त्री, परामर्शदाता, एवं निर्देशनकर्ता के लिए भी प्रस्तुत लघु शोध अत्यंत सहायक सिद्ध होगा |

6.3 अध्ययन के सुझाव

❖ इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के आलोचनात्मक अध्ययन करने पर इनमें बहुत सी कमियां पाई गई है| अतः इतिहास के पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाना आवश्यक है |

❖ प्रचलित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्र, मानचित्र, रेखा-चित्र, ऐतिहासिक पर्यटन आदि के चित्र बहुत कम एवं अस्पष्ट है | अतः प्रकरण से सम्बन्धित स्पष्ट एवं रंगीन चित्र यथास्थान वांछनीय है|

❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में विषय के गहन अध्ययन हेतु आधुनिक आयामों के वेबलिंकों का समावेश किया जाना चाहिए|

❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों को अद्यतन करने की अत्यंत आवश्यकता है |

❖ इतिहास के पाठ्यक्रम में सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं एवं प्रगति को विशेष महत्व दिया जाए|

❖ क्षेत्र/ प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/ शौर्य/ वीरता/ पराक्रम/ संस्कृति/ पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से/अतरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है|

❖ इतिहास की पाठ्यपुस्तकों की आन्तरिक एवं बाह्य साज-सज्जा/ कागज का स्तर/ प्रिन्टिंग इत्यादि उच्च गुणवत्तापूर्ण एव आकर्षक होनी चाहिए|

❖ इतिहास शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत कठपुतली, मुखौटे, भूमिका निर्वाह (Roll play), नाटक, फैन्सी ड्रेस शो, आदि को सम्मलित करने हेतु पाठ के अन्त में सम्बन्धित संकेतों को स्थान दिया जाना चाहिय|

❖ शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत पाठ के अन्त में दिए जाने चाहिएँ |

6.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है| कोई भी शोध कार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें एक कड़ी के संपन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है| कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते हैं | ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके | शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययन किया जाना आवश्यक होता है| शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए संभव नहीं होता जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता | एक शोध समस्या पर किए गया शोध कार्य दूसरे शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन और सुझाव का कार्य करता है| इस शोध कार्य के आधार पर भावी अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

❖ वर्तमान शोध अध्ययन मात्र उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद तथा CBSE BOARD की इतिहास पाठ्य पुस्तकों तक ही सीमित रहा| भावी अनुसंधान में ICSE BOARD, संस्कृत बोर्ड, मदरसा बोर्ड, एम.पी. बोर्ड, मुक्त विद्यालय एवं अन्य राज्यों बोर्ड की इतिहास पाठ्यपुस्तकों को सम्मलित किया जा सकता है|

❖ प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अंतर्गत केवल इतिहास विषय तक सीमित रहा| भावी अध्ययन में सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों **भूगोल, नागरिक शास्त्र**, एवं **अर्थशास्त्र** को सम्मलित किया जा सकता है|

- ❖ प्रस्तुत अध्ययन पूर्व माध्यमिक स्तर तक सीमित रहा| भावी अध्ययन माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर किया जा सकता है|
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन इतिहास विषय की हिन्दी भाषा में उपलब्ध पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रहा| भावी अध्ययन इतिहास विषय की आंग्ल भाषा/ अन्य भाषाओं में उपलब्ध पाठ्यपुस्तकों पर किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, सौरभ (संस्करण: प्रथम) *शैक्षिक अनुसन्धान तथा पद्धति शास्त्र*; चेतना प्रकाशन, आगरा
- कौल, लोकेश (2014) *शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली*; विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा
- गुप्ता, एस. पी. (2015) *अनुसन्धान संदर्शिका*; शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- त्यागी, गुरुसरनदास (2012*) इतिहास शिक्षण*; अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा* (2005) एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- शर्मा, आर. ए. (2009) *सामाजिक विज्ञान शिक्षण*; आर लाल बुक डिपो, मेरठ
- श्रीवास्तव, रोमा एवं गौतम, आरती (2016/17) *सामाजिक विज्ञान शिक्षण*; अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- बर्णवाल, सुमित कुमार एवं अन्य; *शिक्षाशास्त्र,* अरिहन्त पब्लिकेशन (इण्डिया) लिमटेड, मेरठ
- *हमारे अतीत-I* एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- *हमारे अतीत-II* एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- *हमारे अतीत-III* एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- *हमारा इतिहास और नागरिक जीवन* कक्षा- VI, उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद
- *हमारा इतिहास और नागरिक जीवन* कक्षा- VII, उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद

❖ *हमारा इतिहास और नागरिक जीवन* कक्षा- VIII, उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद

Webiliography

1. http://ncert.nic.in/ebooks.html
2. http://www.teachersofindia.org/hi/classroom-resource
3. https://www.eklavya.in/books

7. http://www.neok12.com/History-of-India.htm
8. http://YouTube.com/apoorve-jain
9. https://www.youtube.com/channel/UCKmuyz9WKwhG7fKNDbiulUA
10. https://www.youtube.com/channel/UCJsMNHhptZnw2IBPEBX7icA
11. https://www.youtube.com/watch?v=tA06mJmNwy4&t=2s
12. https://www.youtube.com/watch?v=SdGbamPgf8o
13. https://www.youtube.com/watch?v=CGFsXoAEO1Q&t=2s
14. https://www.youtube.com/watch?v=WyunP13Le4w
15. https://www.facebook.com/groups/1515339105420191/
16. https://www.facebook.com/groups/eps.iimk/?ref=br_rs
17. https://www.facebook.com/groups/386348311482873/
18. https://www.facebook.com/tricktostudy/?fref=ts
19. https://www.facebook.com/Social-science-Study-and-Informations-589795134498126/notifications/

20.https://pramesh.in/about-pramesh-jain-blog/

21.

परिशिष्ट

परिशिष्ट

(अ) हमारे अतीत –I अध्याय 4 आरम्भिक नगर (एनसीईआरटी) मूल रूप में

(ब) अनुक्रमणिका (soft copy)

फोल्डर क्रमांक	शीर्षक	आकार
1	लघु शोध प्रबन्ध	
2	सुझावात्मक आदर्श मॉडल	
3	संदर्भित सामग्री मूल रूप	
4	वीडियो	
5	शोध -पत्र	